केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान

वार्षिक प्रतिवेदन

2017-2018

चोगलमसर, लेह–194101, लदाख (ज. व क.)

विषयानुक्रमणी

		पृ.सं.
1.	संक्षिप्त इतिहास	5
2.	उद्देश्य	6
3.	संस्था	7
4.	प्रबन्धन	7
5.	उप-समितियों की संरचना	7
6.	निधि	8
7.	कर्मचारी संख्या	8
8.	संकाय एवं विभाग	9
9.	नया नामांकन	11
10.	संगोष्ठी/कार्यशाला	11
11.	शैक्षणिक यात्रा	12
12.	प्रकाशन	13
13.	अनुसंधान	13
14.	परिसर	13
15.	पुस्तकालय	14
16.	संग्रहालय	14
17.	विशेष व्याख्यान/अन्य शैक्षिक क्रिया-कलाप	14
	(क) कुशोक बकुला रिनपोछे स्मृति व्याख्यानमाला	
	(ख) अन्य व्याख्यानमाला	
	(ग) भोटी दिवस समारोह	
	(घ) चिकित्सा सुविधा	
	(ङ) वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता	
	(च) वार्षिक/मासिक पत्रिका	
18.	पाठ्यक्रम	16
19.	छात्रवृत्ति	16
20.	छात्रों को पाठ्य-पुस्तक एवं कॉपियों का निःशुल्क वितरण	17
21.	परीक्षा-परिणाम	17
22.	गोनपा/श्रामणेरी विद्यालय	17
23.	वार्षिकोत्सव	18
24.	अन्य महत्त्वपूर्ण घटनायें	18
	(क) भारतरत्न डॉ. बी.आर. अम्बेडकर जयन्ती समारोह	
	(ख) डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जयन्ती/शिक्षक-दिवस समारोह	
	(ग) हिन्दी-दिवस समारोह	
	(घ) विश्व पुस्तक-दिवस समारोह	
	(ङ) बुद्धवचनों का पाठः एक अमूर्त सांस्कृतिक विरासत	

(च) स्वच्छ भारत अभियान
25. संसदीय समिति का दौरा 20
(क) प्रथम राजभाषा संसदीय उप-समिति का आगमन
(ख) लोकसभा के पटल पर रखने वाली संसदीय समिति का आगमन
26. शीतकालीन शिविर 20
27. विदेशी छात्रों के साथ पारस्परिक-संलाप 20
28. मंगोलिया में भारत के राजदूत माननीय डॉ. टी. सुरेश बाबू का दौरा 21
29. बौद्ध दार्शनिक-ग्रन्थ अनुवाद परियोजना 21
30. हिमालयी बौद्ध संस्कृति कोश परियोजना 21
31. पांडुलिपि संसाधन केन्द्र 21
32. डिग्री/डिप्लोमा प्राप्त छात्रों का नियोजन 22
33. दुजिंग फोडंग विद्यालय, जंस्कर 22
(क) संक्षिप्त इतिहास
(ख) परीक्षा-परिणाम
(ग) अन्य क्रियाकलाप
(घ) कर्मचारियों की संख्या
34. बौद्ध दर्शन संस्कृत विद्यालय, केलंग, जिला-लाहुल-स्पीति (हि.प्र.) 23
(क) संक्षिप्त इतिहास
(ख) परीक्षा-परिणाम
(ग) कर्मचारियों की संख्या
35. परिशिष्ट
(i) संस्था की संरचना 25
(ii) प्रबन्धकारिणी समिति की संरचना 27
(iii) शिक्षा समिति की संरचना 29
(iv) वित्तीय समिति की संरचना 31
(v) प्रकाशन समिति की संरचना 32
(vi) पुस्तकालय-समिति की संरचना 33
(vii) अनुसंधान-समिति की संरचना 34
(viii) के.बौ.वि.सं., लेह के कर्मचारियों की श्रेणी-वार संख्या 35
(ix) के.बौ.वि.सं., लेह का वर्ष 2017-18 के छात्रों के परीक्षा-परिणाम 37
(x) गोनपा/श्रामणेरी विद्यालयों की वर्ष 2017-18 में विद्यालय-वार तथा कक्षा-वार छात्रों की संख्या 38
(xi) परीक्षा-परिणाम (दु.फो.वि., जंस्कर) 40
(xii) कर्मचारियों की संख्या (दु.फो.वि., जंस्कर) 41
(xiii) बौ.द.सं.वि., मंडोगुलु (हि.प्र.) के वर्ष 2017-18 के परीक्षा-परिणाम 42
(xiv) बौ.द.सं.वि., मंडोगुलु (हि.प्र.) के कर्मचारियों की संख्या 43

1. संक्षिप्त इतिहास

सन् 1959 से पूर्व लद्दाख के विद्वान, श्रामणेर एवं भिक्षुगण बौद्धधर्म की उच्च शिक्षा के लिए तिब्बत जाते थे। वे तिब्बत जाकर वहाँ के विभिन्न प्रसिद्ध महाविहारों, जिनमें डिगुङ, सेरा, गदन, टशी ल्हुनपो, डेपुङ, सस्क्या, सङ-ङग छोसलिङ, देरगे आदि सम्मिलित थे, में अनेक वर्षों तक बौद्ध विद्याओं का अध्ययन करते थे। परन्तु सन् 1959 की दुर्भाग्यपूर्ण घटना के परिणामस्वरूप अचानक इस परम्परा में व्यवधान पैदा हो गया। तत्पश्चात् यह आवश्यकता महसूस की गयी कि बौद्ध दर्शन के विधिवत् अध्ययन के लिए भारत में ही एक बौद्ध विद्या केन्द्र की स्थापना की जाय। बौद्ध संस्कृति एवं दर्शन के प्रचार-प्रसार के लिए लेह को चिह्नित किया गया, जो प्राकृतिक, भौगोलिक एवं पारम्परिक दृष्टि से सर्वथा अनुकूल था।

तदनुसार चौदहवें दलाई लामा जी के वरिष्ठ गुरु योङजिन लिङ रिनपोछे द्वारा वर्तमान केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान की पूजन-विधि द्वारा स्थापना की गयी। यह संस्थान प्रारम्भ में 'बौद्ध दर्शन महाविद्यालय' के नाम से जाना जाता था। सन् 1962 में स्व. कुशोक बकुला जी के आग्रह पर तत्कालीन प्रधानमंत्री पण्डित जवाहरलाल नेहरु ने लद्दाख के लोगों के बीच इस प्रकार के संस्थान की आवश्यकता का अनुभव किया। तदनुसार उन्होंने इस संस्थान को प्रबन्धन एव वित्तीय सहायता के लिए भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय को सौंपना स्वीकार किया।

प्रारम्भ में इस संस्थान में मात्र 10 भिक्षु छात्र अध्ययन करते थे, जो लद्दाख के विभिन्न गोनपाओं से संबद्ध थे। छात्रों को भोट साहित्य तथा बौद्ध दर्शन पढ़ाने के लिए दो अध्यापकों को नियुक्त किया गया था। लगभग तीन वर्षों तक सभी विद्यार्थियों एवं अध्यापकों का खर्च उपर्युक्त दस गोनपाओं ने वहन किया। सन् 1959 से 1961 तक यह विद्यालय लेह में स्थित रहा। उसके पश्चात् इस विद्यालय को लेह से लगभग 8 किलोमीटर की दूरी पर स्थित पेथुब गाँव में स्थानान्तरित कर दिया गया। सन् 1973 में संस्थान को लेह से 8 किलोमीटर दक्षिण-पूर्व दिशा में स्थित चोगलमसर में पुनः स्थानान्तरित किया गया। सन् 1964 में संस्थान को एक शैक्षिक संस्थान के रूप में जम्मू व कश्मीर पंजीयन कानून 1941 के अन्तर्गत पंजीकृत किया गया। प्रारम्भ में यहाँ बौद्ध दर्शन के अतिरिक्त संस्कृत, हिन्दी, भोटी एवं अंग्रेजी विषयों का अध्यापन होता था। सन् 1973 में संस्थान को सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी (उ.प्र.) से सम्बद्ध कराया गया और सीमान्त क्षेत्र के छात्रों के लिए उपयुक्त पाठ्यक्रम शुरू किये गये। भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय (उच्चतर शिक्षा विभाग) ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की सिफारिश पर यूजीसी अधिनियम 1956 के अनुभाग 3 के अधीन अधिसूचना संख्या एफ 9-5/2001-यू3 (ए), दिनांक 15-01-2016 के अनुसार केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह को 'मानित विश्वविद्यालय' का दर्जा प्रदान किया गया।

संस्थान के प्रथम प्राचार्य के रूप में बौद्ध विद्या के प्रकाण्ड विद्वान भदन्त येशे थुबतन ने सन् 1959 से लेकर 1967 तक कार्य किया। तत्पश्चात् प्रसिद्ध बौद्ध विद्वान भदन्त लोछोस रिनपोछे को संस्थान के दूसरे प्राचार्य के रूप में नियुक्त किया गया। इसके बाद डॉ. टशी पलजोर ने सन् 1979 से 2005 तक संस्थान के प्राचार्य के रूप में कार्य किया। डॉ. नवाङ छेरिङ के सन् 2005 से 2010 तक संस्थान के प्राचार्य के रूप में पाँच वर्षों तक कार्य करने के पश्चात् डॉ. वाङछुग दोर्जे नेगी ने 15 जून 2010 को संस्थान के प्राचार्य का कार्यभार ग्रहण किया। उसके बाद 19-12-2014 को सम्पन्न हुई प्रबन्धकारिणी समिति की बैठक में प्राचार्य पद का निदेशक के रूप में पुनर्नामकरण

किया गया। 12-12-2014 को डॉ. वाङछुग दोर्जे नेगी ने निदेशक पद को छोड़ दिया। वर्तमान में प्रो. कोनछोग वांगदु संस्थान के निदेशक के रूप में कार्य कर रहे हैं।

2. उद्देश्य

संस्थान का मूल उद्देश्य छात्रों की प्रतिभा अर्थात् व्यक्तित्व को बौद्ध विचार, साहित्य, कला एवं विभिन्न आधुनिक विषयों के ज्ञान द्वारा विकसित और सुसज्जित करना है। सम्पूर्ण हिमालयी क्षेत्रों की बौद्ध संस्कृति एवं कला की शिक्षा हेतु यह इस देश का एक अद्वितीय संस्थान है। संस्थान बौद्ध दर्शन और सांस्कृतिक अध्ययन में स्नातक, स्नातकोत्तर एवं डॉक्टरेट कार्यक्रम चलाता है और फीडर विद्यालयों की स्थापना कर उनकी देखरेख भी करता है। उपर्युक्त उद्देश्यों की पूर्ति के लिए संस्थान ने निम्नलिखित लक्ष्य निर्धारित किये हैं-

1. ज्ञान की शाखाओं में उत्कृष्टता एवं नवीनता की ओर ले जाने के लिए उच्च शिक्षा प्रदान करना, जिन्हें मुख्य रूप से स्नातकोत्तर और शोध उपाधि के स्तर पर उपयुक्त समझा जा सके, जो विश्वविद्यालय की अवधारणा, अर्थात् विश्वविद्यालय शिक्षा प्रतिवेदन (1948), भारत में उच्च शिक्षा के नवीकरण, कायाकल्प पर समिति के प्रतिवेदन (2009) और मानित विश्वविद्यालयों के लिए समीक्षा समिति के प्रतिवेदन के अनुरूप (2009) हो।

2. विश्वविद्यालय शिक्षा प्रणाली के उद्देश्य हेतु विशिष्ट सहयोग के लिए विशेष क्षेत्रों में परीक्षित योग्यता के साथ काम में लगाना, अर्थात् एक सामान्य स्वभाव वाले कार्यक्रमों, यथा- कला, विज्ञान, अभियंत्रण, चिकित्सा, दन्तविज्ञान अध्ययन, फार्मेसी, प्रबन्धन आदि विषयों में पारम्परिक संस्थाओं द्वारा नियमित रूप से पारम्परिक उपाधि प्रदान कराना, जिनमें स्पष्ट रूप से अन्तर करने योग्य हो।

3. ज्ञान के विकास तथा उसके प्रसार के लिए विविध शोध कार्यक्रमों द्वारा पूर्णकालिक पी-एच.डी. एवं पोस्ट डॉक्टोरल शोधार्थियों को उच्च गुणवत्तायुक्त शिक्षण एवं शोध सुविधाएँ उपलब्ध कराना।

4. पूर्व में बौद्ध दर्शन महाविद्यालय के नाम से ज्ञात केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, चोगलमसर नामक शैक्षिक संस्थान के विकास एवं प्रबन्धन की देखभाल और सुसंचालन करना।

5. बौद्ध दर्शन एवं संस्कृति के विविध शाखाओं से सम्बन्धित विभिन्न पाठ्यक्रमों के डिग्री एवं डिप्लोमा के लिए अध्ययन एवं शोध हेतु अनुदेश प्रदान करना।

6. शोध, प्रकाशन, जीर्णोद्धार और शिक्षा की उन्नति के लिए सुविधा प्रदान करना तथा बौद्ध दर्शन की ऐसी शाखाओं के ज्ञान का प्रसार करना, जिन्हें संस्थान उचित समझे।

7. विश्व के किसी भी भाग में स्थित शैक्षिक एवं अन्य संस्थानों के साथ सहयोग करना, जिनके उद्देश्य इस संस्थान के उद्देश्य के समान हों और सहयोग इस प्रकार करना, जिससे उद्देश की प्राप्ति लाभकारी हो।

8. बौद्ध दर्शन एवं संस्कृति के देश-विदेश के विद्वानों को बौद्ध दर्शन संस्कृति पर व्याख्यान देने तथा संगोष्ठी एवं विचार-विमर्श के लिए आमंत्रित करना।

9. ऐसे सभी कार्यों को करना जो संस्थान के आंशिक या सम्पूर्ण उद्देश्यों को प्राप्त कराने में आवश्यक और लाभकारी हो।

3. संस्था

संस्थान को मानित विश्वविद्यालय के रूप में मान्यता प्राप्त होने के बाद संस्था के बहिर्नियम, नियम एवं विनियम को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (संस्थान मानित विश्वविद्यालय संशोधन विनियम-2014 तथा तदनुसार 2016 में संशोधित), के अनुसार संशोधित करने की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए संस्था के बहिर्नियम, नियम एवं विनियम को संशोधितकिया गया। संशोधित नियमों के अनुसार संस्थान के कार्य के मार्गदर्शन, एवं पर्यवेक्षण के लिए एक संस्था के गठन करने की आवश्यकता होती है। तदनुसार संस्थान ने उनके कार्य के पर्यवेक्षण एवं मार्गदर्शन के लिए संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के सचिव की अध्यक्षता में एक संस्था का गठन किया है। मौजूदा संस्था की संरचना को परिशिष्ट पृष्ठ संख्या 25 पर दर्शाया गया है।

4. प्रबन्धन

संस्थान का प्रबन्धन संयुक्त सचिव, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की अध्यक्षता में गठित एक प्रबन्धकारिणी समिति के द्वारा सम्पन्न होता है। इस प्रबन्धकारिणी समिति के सदस्यों की संरचना विभिन्न मंत्रालयों, विभागों, संघों, विश्वविद्यालयों एवं बौद्ध विद्वानों के प्रतिनिधियों द्वारा होती है। प्रबन्धकारिणी समिति के पुनर्गठन की पहली बैठक से लेकर सदस्यों के कार्यकाल की अवधि तीन साल होती है। संस्थान के निदेशक इस प्रबन्धकारिणी समिति के सदस्य-सचिव होते हैं। वर्तमान में इस प्रबन्धकारिणी समिति की संरचना परिशिष्ट के अन्तर्गत पृष्ठ सं. 27 पर दर्शाया गया है। इस प्रबन्धकारिणी समिति की बैठक हर छः महीने के बाद आयोजित होती है। प्रबन्धकारिणी समिति के पास सभी प्रकार के कर्तव्यों के पालन करने, कार्य करने तथा संस्था के ज्ञापन-पत्र में बताये गये उद्देश्यों को प्रभाव में लाने का अधिकार है। हलांकि भारत सरकार समय-समय पर महत्त्वपूर्ण नीतिगत मामलों में निर्देश दे सकती है, जिसका अनुसरण करना प्रबन्धकारिणी समिति के लिए बाध्य होगा।

5. उप-समितियों की संरचना

प्रबन्धकारिणी समिति के निर्देशों के समुचित पालन हेतु तथा शैक्षिक, वित्त, अनुसंधान और प्रकाशन आदि मामलों में सहयोग करने के लिए अनेक उप-समितियों का गठन किया गया है। इन उप-समितियों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है-

1. **शिक्षा समितिः** प्रबन्धकारिणी समिति द्वारा प्रख्यात पण्डितों एवं विद्वानों की एक शिक्षा समिति का गठन किया गया है। तत्सम्बन्धी क्षेत्रों में आवश्यकतानुसार प्रबन्धकारिणी समिति को सलाह देने के लिए वर्ष में एक

बार विद्या परिषद की बैठक होती है। इस परिषद की वर्तमान संरचना परिशिष्ट के अन्तर्गत पृष्ठ सं. 29 पर दर्शाया गया है।

2. **वित्त समितिः** संस्था के स्मरण-पत्र और संस्थान के नियम एवं विनियम के अनुसार उप-सचिव (वित्त)/ निदेशक (वित्त), संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की अध्यक्षता में एक वित्त समिति का गठन किया गया है। संस्थान के निदेशक तथा प्रबन्धकारिणी समिति को संस्थान के धन-सम्पत्ति एवं वित्त से सम्बन्धित विषयों पर सलाह देने के लिए वर्ष में एक या दो बार इस समिति की बैठक होती है। इस समिति की संरचना परिशिष्ट के अन्तर्गत पृष्ठ संख्या 31 पर दर्शाया गया है।

3. **प्रकाशन समितिः** संस्थान हिमालय क्षेत्र की कला, संस्कृति एवं भाषा से सम्बन्धित दुर्लभ ग्रन्थों तथा पाण्डुलिपियों का प्रकाशन करता है। इन दुर्लभ ग्रन्थों/पाण्डुलिपियों को प्रेस में भेजने से पूर्व इनके प्रकाशन की समीक्षा एवं उपादेयता प्रमाणित करने के लिए प्रकाशन समिति के समक्ष रखा जाता है। यह समिति प्रकाशन के क्षेत्र में प्रख्यात विद्वानों एवं विशेषज्ञों को जोड़कर बनी है। इस समिति की वर्तमान संरचना परिशिष्ट के अन्तर्गत पृष्ठ संख्या 32 पर दर्शाया गया है।

4. **पुस्तकालय समितिः** पुस्तकालय समिति ग्रन्थालय के क्षेत्र में जानकारी प्राप्त विशेषज्ञों से बनी है। यह समिति समय-समय पर ग्रन्थालय की प्रगति एवं उत्कृष्टता के लिए सिफारिश करती है, जिसमें अतिरिक्त यंत्रों एवं उपकरणों, डिजिलीकरण एवं सूचीपत्र आदि की आवश्यकताएँ सम्मिलित हैं। इस समिति की वर्तमान संरचना परिशिष्ट के अन्तर्गत पृष्ठ संख्या 33 पर दर्शाया गया है।

5. **शोध समितिः** संस्थान की शोध-समिति शोधवृत्ति हेतु शोध-छात्रों के चयन के लिए साक्षात्कार का आयोजन करती है और शोध-छात्रों के क्रियाकलापों तथा प्रगति की समीक्षा करती है। इस समिति की वर्तमान संरचना परिशिष्ट के अन्तर्गत पृष्ठ संख्या 34 पर दर्शाया गया है।

6. निधि

इस संस्थान को भारत सरकार का संस्कृति मंत्रालय सम्पूर्ण आर्थिक अनुदान प्रदान करता है और वर्ष 2017-18 के लिए संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार ने केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह की प्रबन्धकारिणी समिति द्वारा अनुमोदित संस्थान की विभिन्न योजनाओं को कार्यान्वित करने के लिए 2,289 लाख रुपये स्वीकृत किया है। इसके अतिरिक्त वर्ष 2017-18 के लिए जनजातीय उप-योजना के अन्तर्गत 50.00 लाख रुपये आवंटित किया गया है।

7. कर्मचारी-संख्या

संस्थान के निदेशक संस्थान के प्रशासनिक अधिकारी के सहयोग से एक प्रमुख प्रशासनिक पर्यवेक्षण का कार्य

करते हैं। केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह के कर्मचारियों की कोटि-वार संख्या, शैक्षणिक एवं शिक्षणेतर श्रेणी का अलग-अलग विवरण परिशिष्ट के अन्तर्गत पृष्ठ संख्या 35 पर दर्शाया गया है।

8. संकाय तथा विभाग

इस संस्थान को विश्वविद्यालय की पद्धति पर सुचारू तथा प्रभावी रूप से संचालित करने के लिए बौद्ध विहारों की परम्परानुसार पंचमहाविद्या के आधार पर संकायों एवं विभागों की स्थापना की गयी है, जो निम्नवत् है-

1. आध्यात्म एवं न्याय विद्या संकाय (Faculty of Philosophy and Logic)
2. शब्द विद्या संकाय (Faculty of Languages and Literature)
3. सोवा रिगपा एवं शिल्प विद्या संकाय (Faculty of Sowa Rigpa and Arts)
4. आधुनिक विद्या संकाय (Faculty of Modern Studies)

1. अध्यात्म तथा न्याय विद्या संकायः

यह संकाय मूलशास्त्र एवं विभिन्न सम्प्रदाय की शाखाओं सहित तीन विभागों से बना है। बौद्ध विहारों की प्रणाली के अनुसार अध्यात्म एवं न्याय विद्या दो स्वतन्त्र विद्यायें हैं, जिनके अनेक विभाग हैं, परन्तु संस्थान के पाठ्यक्रम की अनुकूलता के लिए इनको एक साथ रखा गया है। इस संकाय के अन्तर्गत निम्नलिखित विभाग हैं-

(क) भोट बौद्ध दर्शन विभाग
(ख) बौद्ध दर्शन विभाग (संस्कृत माध्यम)
(ग) सम्प्रदाय शास्त्र विभाग

2. शब्द विद्या संकायः

यह संकाय विभिन्न भाषाओं से बना है। इस संकाय के अन्तर्गत निम्नलिखित विभाग हैं-
(क) भोटी भाषा विभाग
(ख) शास्त्रीय भाषा विभाग (संस्कृत एवं पालि)
(ग) आधुनिक भाषा विभाग (हिन्दी एवं अंग्रेजी)

3. सोवा रिगपा एवं शिल्प विद्या विभागः

हिमालय की परम्परागत कला और संस्कृति को संरक्षण देने तथा उसे उन्नत करने में संस्थान अत्यधिक रुचि ले रहा है। तदनुसार इस क्षेत्र की कला एवं संस्कृति को संरक्षित एवं उन्नत करने हेतु इस संकाय के अन्तर्गत निम्नलिखित विभागों की स्थापना की गयी है-

(क) सोवा रिगपा तथा ज्योतिष विभागः रोगियों को जड़ी-बूटियों से निर्मित औषधियाँ उपलब्ध कराना इस क्षेत्र की सैकड़ों वर्षों से चली आ रही प्राचीन परम्परा है। इस प्रदेश में जब एलोपैथिक दवाइयाँ उपलब्ध नहीं थी, उस समय अमची विद्या पद्धति (भोट चिकित्सा पद्धति) ही अधिक प्रसिद्ध थी। वर्तमान समय में इस प्रदेश के लोग अमची विद्या पद्धति को सर्वाधिक उपयोगी मानते हैं, क्योंकि इससे दुष्प्रभाव नहीं होता है। इन्हीं

कारणों के चलते लोग इसे पसन्द करते हैं। उक्त बातों को ध्यान रखकर संस्थान इच्छुक विद्यार्थियों को अमची विद्या पद्धति की शिक्षा प्रदान कर रहा है। बारहवीं कक्षा उत्तीर्ण विद्यार्थी, जिन्हें भोटी भाषा का पर्याप्त ज्ञान है, केवल उन्हें ही छः वर्ष की अमची विद्या पद्धति पाठ्यक्रम के लिए उपयुक्त विद्यार्थी माना जाता है। ऐसे अनेक विद्यार्थी हैं, जिन्हें इस विद्या पद्धति में उपाधि प्राप्त हुई है और वे आजकल व्यक्तिगत एवं सरकारी पदों पर अमची चिकित्सक के रूप में कार्य कर रहे हैं।

(ख) हिमालयी कला और शिल्प विभाग

1. पारम्परिक थंका चित्रकला विभागः इस क्षेत्र में चित्रकला बहुत प्रसिद्ध है। लद्दाख के बौद्ध विहारों में यह कला अत्यन्त प्रसिद्ध है, जिनमें विभिन्न प्रकार के थंका एवं भित्तिचित्र दिखाई देते हैं। अलची विहार के भित्तिचित्र तथा हेमिस एवं लामायुरु गोनपाओं के थंका चित्र अत्यन्त प्रसिद्ध हैं। इन विहारों में कुछ थंकाएँ हजारों वर्ष पुरानी हैं, जिनके आज भी दर्शन किये जा सकते हैं। इसके अतिरिक्त यहाँ के प्रत्येक गाँव में एक गोनपा अवश्य दिखाई पड़ता है, जिसमें थंकाओं, भित्तिचित्रों, मूर्तियों का अपार भंडार है। ग्रीष्मकाल में दुनिया भर के पर्यटक लद्दाख की गोनपाओं में स्थित थंकाओं तथा अन्य धार्मिक उपकरणों से सुसज्जित बौद्ध विहारों के दर्शन करने आते हैं। संस्थान ने विद्यार्थियों के लिए भोटी चित्रकला में प्रशिक्षण के लिए पाठ्यक्रम की व्यवस्था की है। थंका बनाने की सदियों पुरानी परम्परा को जीवित रखने के लिए अनेक विद्यार्थी इस पाठ्यक्रम के द्वारा प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं।

2. पारम्परिक मूर्तिकला विभागः लद्दाख क्षेत्र में मिट्टी से मूर्तियों तथा मुखौटों का निर्माण करना एक सामान्य बात है। जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है कि यहाँ के बौद्ध विहार मूर्तियों एवं मुखौटों से परिपूर्ण हैं। यहाँ के प्रत्येक विहार में विशेष तिथियों पर धार्मिक त्योहार गुस्तोर/दोस्मोछे/ छेस़चु आदि मनाये जाते हैं। इन शुभ अवसरों पर विभिन्न प्रकार के बुद्धों, बोधिसत्त्वों, इष्टदेवों आदि की वेशभूषा एवं मुखौटा धारण कर मुखौटा-नृत्य (छम) का प्रदर्शन किया जाता है। संस्थान ने विद्यार्थियों को बुद्धों, बोधिसत्वों, देवी-देवताओं, इष्टदेवों आदि की मूर्तियों के निर्माण हेतु कला के प्रशिक्षण की व्यवस्था की है। इच्छुक विद्यार्थी, जो दसवीं कक्षा उत्तीर्ण कर चुके हैं, उन्हें छः वर्ष का मूर्तिकला प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। वर्तमान में अनेक विद्यार्थी मूर्ति एवं मुखौटा निर्माण कला का प्रशिक्षण ले रहे हैं।

3. पारम्परिक काष्ठकला विभागः प्राचीन काल में लद्दाख में पुस्तकों के प्रकाशन हेतु कोई मुद्रण यंत्र उपलब्ध नहीं था। ऐसी स्थिति में लोग लकड़ी के ब्लॉकों से धार्मिक ग्रन्थों या अन्य ग्रन्थों की प्रतिलिपि बनाते थे। धार्मिक-ग्रन्थों की लिपियाँ विशेषकर कठोर लकड़ी के ब्लॉक पर नियत रूप से खुदाई की जाती है, जिससे बाद में पढ़ने के लिए किसी कागज पर छपाई की जा सके। एक बार किसी लकड़ी के ब्लॉक पर खुदाई हो जाने पर फोटाकॉपी मशीन की तरह उससे हजारों बार प्रतिलिपियाँ बनायी जा सकती है। प्राचीन काल में लद्दाख में यह कला अत्यन्त प्रसिद्ध थी। यहाँ बौद्ध विहारों एवं बौद्धों के घरों की छतों पर पाँच विभिन्न रंगों की पताकाएँ फहराने की परम्परा है, जिन्हें तरचोग के नाम से जाना जाता है। मुख्य द्वारों पर बड़ी लम्बी-सी पताका फहरायी जाती है, जिसे तरछेन कहा जाता है। कपड़े से बनी पताकाओं पर लकड़ी के ब्लॉकों की सहायता से सूत्र, मंत्र, लुंगता एवं ग्यलछन च़ेमो (ध्वजाग्र) आदि छापे जाते हैं, जो आध्यात्मिक शक्ति के प्रतीक हैं। उक्त काष्ठकला के निरन्तर संरक्षण के उद्देश्य से संस्थान ने एक छः वर्षीय काष्ठकला पाठ्यक्रम की व्यवस्था की है। यहाँ छात्र लकड़ी के ब्लॉक के निर्माण के अतिरिक्त अन्य साजो-सामान, जैसे- ड्रेगन, पक्षी, सिंह, घोड़ा आदि जन्तुओं एवं अन्य वस्तुओं की निर्माण-कला का भी प्रशिक्षण लेते हैं। लद्दाख क्षेत्र में यह कला अत्यन्त प्रसिद्ध

है और व्यक्ति अपनी जीविका के लिए इसे अच्छा व्यवसाय मानता है।

4. आधुनिक विद्या संकायः इस संकाय के अन्तर्गत निम्नलिखित पाँच विभाग हैं-

1. बौद्ध पुराणेतिहास विभाग
2. तुलनात्मक दर्शन विभाग
3. सामाजिक विज्ञान विभाग

9. नया नामांकन

संस्थान द्वारा निर्धारित प्रवेश के नियमों के अन्तर्गत प्रवेश-समिति द्वारा साक्षात्कार के आधार पर छात्रों को कक्षा 6 से 9 तक प्रवेश दिया जाता है। संस्थान के शाखा गोनपा विद्यालयों के छात्रों को संस्थान में सीधे प्रवेश दिया जाता है। संस्थान के छः वर्षीय पाठ्यक्रम वाले अमची, तिब्बती थंका चित्रकला, मूर्तिकला तथा काष्ठकला में भी सीट की उपलब्धता के आधार पर प्रवेश दिया जाता है। वर्तमान सत्र के दौरान प्रस्तुत विवरण के अनुसार व्यावसायिक कक्षाओं के साथ सभी कक्षाओं में कुल 110 नये विद्यार्थियों को प्रवेश दिया गया है।

10. संगोष्ठी/कार्यशाला

शैक्षणिक गतिविधियों के रूप में वर्ष 2017-18 में संस्थान में अनेक संगोष्ठियों एवं कार्यशालाओं का आयोजन किया गया, जिसके विविरण निम्नवत् हैं-

(क) हिन्दी का दैनन्दिन कार्यालयीय प्रयोग पर संस्थान में दिनांक 28 अप्रैल 2017 को प्रो. कोनचोग वांगदु, निदेशक की अध्यक्षता में एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री वेदप्रकाश गौड़, निदेशक, राजभाषा विभाग, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार ने कार्यालयीय पत्राचार में हिन्दी के प्रयोग पर अपना व्याख्यान दिया। इस कार्याशाला में सभी प्रशासनिक अधिकारी एवं कर्मचारीगण, पुस्तकालय, आधुनिक भाषा विभाग एवं शोध संभाग के सभी अधिकारीगण ने भाग लिया। दैनिक कार्यालयीय कार्यों में हिन्दी के प्रयोग विषय पर यह कार्यशाला अत्यन्त सफल एवं उपयोगी साबित हुआ।

(ख) संस्थान में ''बाल-सुरक्षा के प्रति जागरूकता'' विषय पर लेह न्यूट्रिशन प्रोजेक्ट के सहयोग एवं यूनिसेफ की वित्तीय सहायता से दिनांक 20-21 मई, 2017 को द्विदिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला का उद्घाटन प्रो. समदोङ रिनपोछे ने दिनांक 20 मई 2017 के प्रातः 10.00 किया। इस कार्यक्रम में गोनपा/श्रामणेरी विद्यालयों के 60 अध्यापकों ने, जो अपने-अपने गोनपा/श्रामणेरी विद्यालयों के बाल छात्रों से सम्बद्ध हैं, सक्रिय रूप से भाग लिया। इस अवसर पर लद्दाख के बाहर के तीन शिक्षा-क्षेत्र से जुड़े विशेषज्ञों ने अपने प्रस्तुतीकरण दिये।

(ग) संस्थान में भारतीय दार्शनिक शोध परिषद, नई दिल्ली के वित्तीय सहयोग से ''लद्दाख में बौद्धधर्म'' विषय पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन दिनांक 1-3 अगस्त, 2017 को आयोजित किया गया। इस संगोष्ठी का उद्घाटन परम पावन दलाई लामा ने 1 अगस्त, 2017 को प्रातः 8.00 बजे किया। उद्घाटन समारोह में श्री छेरिंग दोर्जे, माननीय सहकारिता एवं लद्दाख मामलों के मंत्री, जम्मू व कश्मीर सरकार, परम पावन रिजोङ स्त्रुल

ठि-जुर रिनपोछे, श्री दोर्जे मुटुप, मुख्य कार्यकारी पार्षद, श्री नवाङ रिगजिन जोरा, विधानसभा सदस्य, प्रो. एस.आर. भट्ट, निदेशक, आई.सी.पी.आर. सहित विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं सस्थानों के विद्वानों ने भाग लिया।

(घ) संस्थान में दिनांक 21-23 अगस्त, 2017 को इन्टरनेशनल एसोसिएशन फॉर लद्दाख स्टडीज के सहयोग से ''अनुसंधान : नैतिकता एवं प्रविधि'' विषय पर तीन दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में संस्थान के शोध-छात्रों और वरिष्ठ छात्रों ने सक्रिय रूप से भाग लिया।

(ङ) संस्थान में निदेशक (विज्ञान) कार्यालय, भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण, देहरादून, केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह और लद्दाख बौद्ध संघ, लेह के संयुक्त सहयोग से दिनांक 31 अगस्त से 1 सितम्बर, 2017 तक ''लद्दाख क्षेत्र के मठ एवं भित्ति-चित्रों के संरक्षण एवं संवर्द्धन'' विषय पर दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर डॉ. सोनम दावा लोनपो, तत्कालीन मुख्य कार्यकारी पार्षद, लद्दाख स्वायत्त पर्वतीय विकास परिषद, लेह मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। इस कार्यशाला में भाग लेने हेतु प्रत्येक बड़े मठ से पाँच-पाँच भिक्षुओं को आमंत्रित किया गया। दिनांक 1 सितम्बर 2017 को 11वीं शताब्दी के प्रसिद्ध अलची ल्हखङ में भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण की विज्ञान शाखा के विशेषज्ञों के दल द्वारा प्रायोगिक प्रस्तुतीकरण दिया गया।

(च) दिनांक 13 से 14 अगस्त, 2017 को संस्थान में ''महायान उत्तरतन्त्र'' विषय पर चार दिवसीय अखिल भारतीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें विभिन्न बौद्ध विहारों और विश्वविद्यालयों से विद्वानों को आमंत्रित किया गया। इस संगोष्ठी का उद्घाटन संस्थान के नागार्जुन सभागार में परम पावन रिजोङ रिनपोछे ने दिनांक 13 अगस्त 2017 को पूर्वाह्न 10.00 बजे किया। उद्घाटन समारोह में बड़ी संख्या में विद्वान, शिक्षाविद, शोध-छात्र, छात्र एवं रुचि रखने वाले अन्य लोगों ने भाग लिया।

(छ) कश्मीर केन्द्रीय विश्वविद्यालय के पर्यटन विभाग ने आई.टी.एच.ई. और केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान के सहयोग से संस्थान में ''संघर्षपूर्ण परिस्थिति में पर्यटन के लिए विपणन-रणनीति की पुनर्प्राप्ति'' विषय पर दो दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन संस्थान में दिनांक 8 से 9 सितम्बर, 2017 को सम्पन्न हुआ। इस संगोष्ठी में विभिन्न देशों एवं भारत के अनेक विश्वविद्यालयों के विद्वानों में भाग लिया।

(ज) संस्थान के कनिष्ठ संभाग में 23 सितम्बर, 2017 को 19वें कुशोक बकुला की जयन्ती के अवसर पर ''19वें बकुला रिनपोछे के जीवन, उपलब्धि और योगदान'' विषय पर एक दिवसीय स्थानीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें लेह क्षेत्र के विभिन्न सरकारी एवं निजी विद्यालयों के अनेक छात्रों ने भाग लिया।

11. शैक्षिक-यात्रा

संस्थान के आचार्य द्वितीय वर्ष, शास्त्री तृतीय वर्ष एवं उत्तर-मध्यमा द्वितीय वर्ष, शिल्प-कला, चित्रकला एवं काष्ठ-कला के अंतिम वर्ष के कुल 50 छात्रों के दल को जनवरी, 2018 में 36 दिनों के लिए भारत-दर्शन की शैक्षिक-यात्रा पर भेजा गया। इस दल ने दिल्ली, हैदराबाद, बंगलुरू, त्रिवेन्द्रम, गोवा, पुणे, भोपाल आदि स्थानों का भ्रमण किया। शैक्षिक दल को खनपो कर्मा तेनज़िन, प्राध्यापक और श्री जमयङ ल्हुनडुप, कम्प्यूटर प्रशिक्षक के पर्यवेक्षण में भेजा गया। इस शैक्षिक-यात्रा का उद्देश्य था छात्रों को देश के महान ऐतिहासिक, औद्योगिक, धार्मिक

एवं भौगोलिक सम्पदा से परिचित कराना तथा उनमें राष्ट्रीय एकता की भावना उत्पन्न करना।

कनिष्ठ वर्ग के छात्रों को तीन अध्यापकों के संरक्षण में स्थानीय लद्दाख-दर्शन शैक्षिक-यात्रा के अन्तर्गत पाँच दिनों के लिए चङथङ घाटी भेजा गया। इस शैक्षिक-यात्रा में पूर्वमध्यमा द्वितीय वर्ष के 82 छात्रों को सम्मिलित किया गया। इस दल ने लद्दाख के ऐतिहासिक स्थलों, गोनपाओं, झीलों आदि को देखा। इन शैक्षिक-यात्राओं के मद में संस्थान ने कुल 5.51 लाख रुपये व्यय किया।

इसके अतिरिक्त संस्थान के सोवा-रिगपा विभाग के 22 छात्रों के दल को अध्यापकों के निर्देशन में सोवा-रिगपा प्रणाली के औषधि निर्माण में काम आने वाले विभिन्न औषधीय जड़ी-बूटियों एवं खनिजों की पहचान/संग्रहण के लिए करगिल जिला के सापी गाँव भेजा गया। इस दौरान विभिन्न प्रकार की जड़ी-बूटियों का संग्रह किया गया और औषधि निर्माण के लिए प्रदर्शित किया गया। लिये गये नमूने को सन्दर्भ के लिए सम्भाल कर एलबम में रख लिया गया है। इस यात्रा के दौरान बड़ी संख्या में जड़ी-बूटियों की पहचान की गयी तथा कच्चा माल का संग्रह किया गया। संस्थान का सोवा-रिगपा विभाग अनेक प्रकार दवाईयाँ की प्रायोगिक कक्षा के अन्तर्गत बनाता है, जिनमें दवाईयाँ चूर्ण, गोली आदि के रूप में होती हैं। इस वर्ष के दौरान इन दवाईयों को बहुत ही कम मूल्य पर रोगियों में वितरित की गयी तथा कर्मचारियों एवं छात्रों को निःशुल्क दी गयी।

12. प्रकाशन

संस्थान ने अब तक विभिन्न विषयों पर 87 दुर्लभ एवं महत्त्वपूर्ण पुस्तकों का प्रकाशन किया है, जिनमें राष्ट्रीय संगोष्ठियों के दौरान पढ़े गये शोध-निबन्धों का संकलन (लद्दाख-प्रभा सीरीज) भी सम्मिलित है। वर्ष 2017-18 के दौरान संस्थान ने दो पुस्तकों, जिनमें लद्दाख-प्रभा-19 (साक्य-सम्प्रदाय की समाधि और विनयः एक विशिष्ट दृष्टि) एवं ''भोटी भाषा में भोट गणना पर्यायवाची'' सम्मिलित हैं।

13. अनुसंधान

संस्थान ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की पद्धति पर आठ शोध-अध्येयतावृत्ति की व्यवस्था की है। शोध-कार्य बौद्धधर्म तथा तत्सम्बन्धी विषयों पर कराये जाते हैं। शोधावधि सफलतापूर्वक सम्पन्न होने पर अब तक अनेक पी-एच.डी. उपाधियाँ प्रदान की गयी हैं। दिनांक 13 मार्च, 2015 को आहूत प्रबन्धकारिणी समिति की बैठक में यू.जी.सी की पद्धति पर चार से बढ़ाकर आठ शोध-अध्येतावृत्ति की व्यवस्था की गयी। वर्तमान में आठ शोध-छात्र पी-एच.डी. उपाधि के लिए शोधकार्य कर रहे हैं।

14. परिसर

यह संस्थान लेह शहर से आठ किलोमीटर दक्षिण-पूर्व में चोगलमसर नामक स्थान पर सिंन्धु नदी के किनारे स्थित है। इस संस्थान के दो परिसर हैं- नया परिसर और पुराना परिसर। संस्थान का पुराना परिसर 23 कनाल के क्षेत्रफल में

फैला हुआ है, जिसमें कक्षा 6 से 8 तक के कुल 145 छात्रों के लिए कक्षाएँ संचालित होती हैं। यह विद्यालय प्रशिक्षित स्नातक अध्यापक (टी.जी.टी.) तथा अन्य कर्मचारियों के सहयोग से एक प्रधानाध्यापक के प्रभार में संचालित है। इस परिसर में शैक्षिक खंड, एक छोटा सभागार, कार्यालय तथा बालकों के लिए एक पुस्तकालय है। इसी पुराने परिसर में पांडुलिपि स्रोत केन्द्र, पांडुलिपि संरक्षण केन्द्र आदि कुछ योजनाएँ चल रहीं हैं। इसी परिसर में 20 विस्तरों की क्षमता वाला एक अतिथि-आवास भी है। नया परिसर पुराने परिसर से लगभग आधा किलोमीटर की दूरी पर बनाया गया है, जिसमें अकादमिक, प्रशासनिक, पुस्तकालय एवं तीन छात्रावास (भिक्षु, लड़के, और लड़कियों के लिए 100-100 सीटों वाले) के अलग-अलग खंड हैं। नये परिसर में कर्मचारियों के लिए 60 कर्मचारी आवास तथा दर्शक-दीर्घा, प्रसाधन-कक्षों एवं भंडार-गृह से सुसज्जित एक बड़ा स्टेडियम है। इसके अतिरिक्त नये परिसर में अनेक प्रकार की गतिविधियों को संचालित करने के लिए 570 लोगों के बैठने की क्षमता वाला एक सभागार भी है। इसके साथ अन्य गतिविधियों को संचालित करने के लिए एक दार्शनिक संलाप-सभागार एवं छात्र मनोरंजन केन्द्र भी बना है। इस परिसर में श्रामणेरियों के लिए एक छात्रावास तथा प्रोफेसर के रहने के लिए चार प्रोफेसर-आवास का निर्माण-कार्य प्रगति पर है।

15. पुस्तकालय

पुस्तकालय संस्थान का महत्त्वपूर्ण अंग है, जिसपर छात्र एवं अध्यापक ही नहीं अपितु संस्थान के अन्य सदस्य भी सूचना एवं ज्ञान की प्राप्ति के लिए निर्भर रहते हैं। इस पुस्तकालय में बड़ी संख्या में देशी-विदेशी पर्यटक आते रहते हैं। पुस्तकालय को संस्थान के नये परिसर में स्थानान्तरित कर दिया गया है, जिसके लिए अलग से तीन-मंजिला भवन का निर्माण किया गया है। पुस्तकालय को ''स्लिम थुमी'' सॉफ्टवेयर के द्वारा कम्प्यूटरीकृत किया गया है। इस पुस्तकालय के तीन विभाग हैं- (1) सामान्य विभाग, (2) भोट/सुङबुम विभाग, और (3) सन्दर्भ विभाग। इस पुस्तकालय में भोटी, हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, पालि तथा उर्दू भाषाओं के धार्मिक, ऐतिहासिक, दार्शनिक, काव्य एवं सामाजिक विषयों पर कुल 33,160 पुस्तकें उपलब्ध हैं। इस पुस्तकालय में विश्वकोश, शब्द-कोश, वार्षिकी आदि सन्दर्भ-ग्रन्थों का अच्छा संग्रह है। उक्त वर्ष के दौरान संस्थान ने कुल 5.60 लाख रुपये की कुल 214 पुस्तकें खरीदा। उक्त वर्ष के दौरान संस्थान का पुस्तकालय भारत एवं विदेश के कुल 16 शोध-पत्रिकाएँ/नियतकालीन पत्रिकाओं का ग्राहक बना। इसके अतिरिक्त पुस्तकालय विभिन्न प्रकार एवं भाषाओं की कुल 9 पत्रिकाओं का ग्राहक भी बना। छात्र एवं पाठक के हित को ध्यान में रखते हुए पुस्तकालय विभिन्न प्रकार के 8 समाचार-पत्रों को मंगाती है।

16. संग्रहालय

संस्थान ने एक लघु पुरातात्विक संग्रहालय की स्थापना की है, जिसमें लद्दाख के पुरावस्तुएँ, कलाकृतियाँ, शिल्प एवं चित्रकृतियाँ तथा भारत के विभिन्न ऐतिहासिक स्थलों से प्राप्त पुराने छाया-चित्र एवं प्रतिकृतियाँ संग्रहित हैं। यह अपने किस्म का एक अनूठा संग्रहालय है, जो प्रतिवर्ष बड़ी संख्या में पर्यटकों एवं शोधकर्ताओं का ध्यान अपनी ओर खींचता है।

17. विशेष व्याख्यान/अन्य शैक्षणिक गतिविधियाँ

क) ग्यलस्त्रस कुशोक बकुला रिनपोछे स्मृति व्याख्यामालाः भदन्त कुशोक बकुला रिनपोछे लद्दाख के एक प्रकाण्ड विद्वान, सन्त और एक समाज सुधारक थे। उन्होंने लद्दाख के विकास के लिए अनेक महत्वपूर्ण कार्य किये। उन्होंने अपना पूरा जीवन इस क्षेत्र के निर्धन एवं दलित लोगों के कल्याण एवं उत्थान के लिए बिताया। उन्हें जम्मू व कश्मीर राज्य के कैबिनेट मंत्री के रूप में अच्छा राजनैतिक स्थान प्राप्त था। वे भारतीय संसद के सदस्य तथा मंगोलिया में भारत के राजदूत रहे। उनके सामाजिक कार्य को मान्यता देते हुए भारत सरकार ने उन्हें पद्मभूषण की उपाधि प्रदान की। उनके प्रयास से इस क्षेत्र के समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण एवं विकास के लिए वर्ष 1959 में केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, जिसको पहले बौद्ध दर्शन महाविद्यालय, लेह के नाम से जाना जाता था, की स्थापना हुई। उनकी स्मृति में 27 फरवरी, 2004 को आहूत केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान की प्रबन्धकारिणी समिति की बैठक में एक व्याख्यानमाला आरम्भ करने का निर्णय लिया गया। उक्त वर्ष के दौरान व्याख्यानमाला का 13वाँ व्याख्यान दिनांक 13 और 14 मार्च, 2018 को आयोजित किया गया, जिसमें व्याख्यान देने के लिए प्रो. लोबजंग छेवाङ (सेवानिवृत्त) और श्री सोनम वांगचुक, 19वें कुशोक बकुला रिनपोछे के निजी सचिव को आमंत्रित किया गया। उन दोनों ने 19वें कुशोक बकुला रिनपोछे के जीवन एवं योगदान से सम्बन्धित विषयों पर व्याख्यान दिया। इस व्याख्यान में कर्मचारीगण, छात्रगण एवं अन्य रुचि रखने वाले लोग उपस्थित रहे।

ख) अन्य व्याख्यान-मालाः

1. प्रो. समदोङ रिनपोछे, पूर्व उप-कुलपति, केन्द्रीय तिब्बती उच्च शिक्षा संस्थान, सारनाथ को ''आधुनिक वैज्ञानिक युग में बौद्धधर्म का महत्त्व'' विषय पर दिनांक 20 मई 2017 को व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया गया। इस अवसर पर संस्थान के अध्यापक और छात्र व्याख्यान सुनने हेतु उपस्थित थे।

2. प्रो. येशे थबकस, सेवानिवृत्त प्रोफेसर, केन्द्रीय तिब्बती उच्च शिक्षा संस्थान, सारनाथ को विशेष रूप से संस्थान के अध्यापकों एवं छात्रों के लिए व्याख्यान देने हेतु आमंत्रित किया गया। उन्होंने दिनांक 1 जून 2017 तथा 4 जुलाई 2017 को बौद्ध दर्शन पर व्याख्यान दिये।

3. *भोटी दिवस समारोहः* संस्थान के भोटी भाषा विभाग द्वारा 24 सितम्बर 2017 को 'भोटी दिवस' का आयोजन किया गया। इस अवसर पर भोटी भाषा में आयोजित साहित्यिक, निबन्ध, भाषण एवं प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए अन्य सरकारी एवं निजी विद्यालयों के छात्रों को आमंत्रित किया गया। इस अवसर पर विद्वान वक्ताओं ने लद्दाख के दैनिक काम-काज में भोटी भाषा के महत्त्व एवं उसकी वर्तमान स्थिति पर भाषण दिया। इस अवसर पर रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं भोटी भाषा में नाटक प्रस्तुत किया गया।

4. *चिकित्सा सुविधाः* संस्थान में अपना एक दवाखाना है, जहाँ छात्रों एवं कर्मचारियों को निःशुल्क दवा उपलब्ध करायी जाती है। एक अंशकालिक डॉक्टर एक दिन छोड़कर दवाखाना में उपलब्ध रहते हैं। डॉक्टर की सहायता के लिए एक स्टाफ नर्स एवं एक नर्सिंग उपचारिका की व्यवस्था है। यह प्रबन्ध छात्रों एवं कर्मचारियों के लिए बहुत उपयोगी है। उक्त वर्ष के दौरान कुल 2.39 लाख रुपये की दवाएँ खरीदकर छात्र एवं कर्मचारियों के विभिन्न प्रकार की बिमारियों के उपचार के लिए निःशुल्क वितरित की गयी।

5. *वार्षिक खेलकूद समारोहः* खेलकूद की गतिविधियों को प्रोत्साहन देने के लिए संस्थान ने दिनांक 24

सितम्बर से 1 अक्तूबर, 2017 को वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन किया, जिसमें तीनों सदनों, नालन्दा, विक्रमशिला एवं तक्षशिला के बीच विभिन्न प्रकार के खेलों की प्रतियोगिताएँ सम्मिलित थीं। अध्यापकों एवं छात्रों ने इस समारोह में सक्रिय रूप से भाग लिया और यह समारोह सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। इस वार्षिक आयोजन के अवसर पर विजेताओं को पदकों और प्रमाण-पत्रों द्वारा सम्मानित किया गया।

6. वार्षिक/मासिक पत्रिकाः संस्थान ''रिगपई दुद-त्री'' नाम से एक वार्षिक एवं भोटी भाषा और अंग्रेजी भाषा में क्रमशः ''लोब-मई गा-छल़'' और ''ग्रीन ग्रोव'' नामक दो मासिक पत्रिकाओं का प्रकाशन करता है, जिनमें विभिन्न विषयों पर छात्रों एवं कर्मचारियों के लेख रहते हैं। इन पत्रिकाओं में छात्रों एवं संस्थान की उपलब्धियों से सम्बन्धित समाचार, जिनमें वर्ष के दौरान प्राप्त किये गये पुरस्कारों आदि के समाचार छायाचित्रों के साथ रहता है। यह पूर्ण रूप से सांस्थानिक पत्रिकाएँ हैं, जिनमें संस्थान की प्रकृति एवं उद्देश्यों का उल्लेख रहता है।

18. पाठ्यक्रम

संस्थान के दस वर्षीय रचनात्मक प्पाठ्यक्रम के अन्तर्गत हिन्दी, संस्कृत, बौद्ध दर्शन एवं भोटी भाषा के विषय सम्मिलित हैं। वर्ष 1973 में संस्थान को सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी से मान्यता प्राप्त हुआ, और उसी के अनुसार सीमान्त क्षेत्र के छात्रों की आवश्यकताओं तथा संस्थान के लक्ष्य एवं उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए पाठ्यक्रम का निर्धारण किया गया। बाद में जनवरी 2016 में संस्थान को मानित विश्वविद्यालय की मान्यता मिलने के बाद आवश्यकतानुसार सेमेस्टर प्रणाली के अन्तर्गत पाठ्यक्रम में संसशोधन किया गया। अनेक कार्यशालाओं के द्वारा विषय-विशेषज्ञों को आमंत्रित कर तथा अन्य विश्वविद्यालयों के सम्बद्ध विभागाध्यक्षों से पुष्टि कराकर पाठ्यक्रम को लागू किया गया। इसके बाद इस पाठ्यक्रम को शैक्षिक समिति के समक्ष विचारार्थ एवं अनुमोदनार्थ रखा गया। अनिवार्य विषयों के रूप में हिन्दी, अंग्रेजी, भोटी साहित्य और बौद्ध दर्शन को रखा गया, जबकि वैकल्पिक विषयों के रूप में राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र, पालि, संस्कृत, तुलनात्मक दर्शन, सोवा-रिगपा, काष्ठ-कला, शिल्प-कला एवं चित्रकला को रखा गया। सफल उम्मीदवारों को आचार्य, शास्त्री, उत्तर-मध्यमा और पूर्व-मध्यमा के प्रमाण-पत्र दिये जाते हैं, जिसे अन्य विश्वविद्यालयों और जम्मू व कश्मीर राज्य के द्वारा सरकारी सेवा में नियुक्ति हेतु एवं अन्य विश्वविद्यालयों में नामांकन हेतु मान्यता प्रदान की गयी है। शैक्षिक उपाधि की समकक्षता निम्नवत् है-

प्रमाण-पत्र	समकक्षता
1. पूर्वमध्यमा	मैट्रिक/हाई स्कूल
2. उत्तरमध्यमा	उच्चतर माध्यमिक/12वीं
3. शास्त्री	स्नातक/बी. ए.
4. आचार्य	स्नातकोत्तर/एम. ए.

संस्थान ने शास्त्री एवं आचार्य स्तर पर महायान बौद्धधर्म के सम्प्रदाय-शास्त्र को एक अनिवार्य वैकल्पिक विषय के रूप में सम्मिलित किया है, जिसका अध्यापकों, छात्रों तथा लद्दाख के विद्वानों ने स्वागत किया है।

19. छात्रवृत्ति

संस्थान के कुल 675 छात्रों को 820 रुपये से लेकर 1010 रुपये प्रतिमाह प्रति छात्र की दर से छात्रवृत्ति प्रदान की गयी। इसके अतिरिक्त दुजिंग फोटंग विद्यालय, जंस्कर, बौद्ध दर्शन संस्कृत विद्यालय, मंडोगुलु तथा 50 पोषित गोनपा/श्रामणेरी विद्यालय के छात्रों को भी छात्रवृत्ति प्रदान की गयी। इस प्रकार उक्त वर्ष के दौरान छात्रवृत्ति के मद में कुल 165.60 लाख रुपये खर्च किये गये।

20. छात्रों को पाठ्य पुस्तकों एवं कॉपियों का निःशुल्क वितरण

संस्थान में पढ़ने वाले छात्रों, उसकी शाखा विद्यालयों एवं पोषित गोनपा/श्रामणेरी विद्यालयों के छात्रों, जो पिछड़े एवं दुर्गम इलाके के अनुसूचित जनजाति समुदाय से आते हैं, को पाठयपुस्तकें और कॉपियाँ संस्थान के द्वारा निःशुल्क वितरित की जाती है। तदनुसार संस्थान द्वारा जनजातीय उप-योजना के अन्तर्गत सभी छात्रों को निःशुल्क पाठ्यपुस्तकें एवं कॉपियाँ का प्रबन्ध किया गया। उक्त वर्ष के दौरान पाठयपुस्तक एवं कॉपी के मद में कुल 27.20 लाख रुपये खर्च कर इस क्षेत्र के सुदूरवर्ती निवासी संस्थान के छात्रों, उसकी शाखा विद्यालयों तथा पोषित गोनपा/श्रामणेरी विद्यालयों के छात्रों को निःशुल्क वितरित किया।

21. परीक्षा-परिणाम

संस्थान के कनिष्ठ संभाग की कक्षा 6 से लेकर 8 के छात्रों की परीक्षा वहाँ के प्रधानाध्यापक द्वारा आयोजित की गयी। कक्षा पूर्वमध्यमा प्रथम से आचार्य द्वितीय तक की परीक्षा का आयोजन परीक्षा विभाग के द्वारा एक अध्यापक के प्रभार में किया जाता है। परीक्षा का उत्तीर्णता का कुल प्रतिशत 74 रहा। वर्ष 2017-18 के कक्षा-वार परीक्षा-परिणाम को परिशिष्ट के अन्तर्गत पृष्ठ संख्या 37 पर दर्शाया गया है।

कनिष्ठ छात्रों की शैक्षिक योग्यता में सुधार के लिए संस्थान द्वारा प्रतिवर्ष जून और नवम्बर में क्रमशः अर्द्ध-वार्षिक एवं वार्षिक परीक्षा का आयोजन किया जाता है।

22. गोनपा/श्रामणेरी विद्यालय

अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए संस्थान विभिन्न गोनपाओं में 50 गोनपा/श्रामणेरी विद्यालयों का संचालन कर रहा है, जो इस क्षेत्र में अत्यन्त लोकप्रिय है। ये विद्यालय सम्बद्ध गोनपाओं के सहयोग से उन गोनपाओं में चल रहा है। सम्बद्ध गोनपाओं द्वारा कक्षा के लिए कमरे, छात्रावास की सुविधा तथा पूजा-पाठ से सम्बन्धित शिक्षण की व्यवस्था की जाती है। संस्थान के द्वारा उन विद्यालयों में छात्रों की संख्या के अनुसार एक से तीन अध्यापकों की व्यवस्था की जाती है। इसके अतिरिक्त संस्थान द्वारा फर्नीचर, स्टेशनरी, पाठ्यपुस्तकें, कॉपियाँ तथा छात्रवृत्ति की व्यवस्था की जाती है। संस्थान के द्वारा नियुक्त अध्यापकों द्वारा मठीय शिक्षा के साथ-साथ प्रारम्भिक शिक्षा जैसे- भोटी, हिन्दी, अंग्रेजी,

गणित, सामाजिक अध्ययन आदि विषयों की शिक्षा दी जाती है। उक्त वर्ष के दौरान लद्दाख के सुदूर इलाके में स्थित इन 50 गोनपा/श्रामणेरी विद्यालयों में कुल 927 छात्रों का नामांकन हुआ। वर्ष 2017-18 के दौरान विद्यालय-वार तथा कक्षा-वार छात्रों की संख्या को परिशिष्ट के अन्तर्गत पृष्ठ संख्या 38 पर दर्शाया गया है।

23. वार्षिक समारोह

केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान का 58वाँ स्थापना दिवस 23 अक्तूबर 2017 को संस्थान के परिसर में उत्साह के साथ मनाया गया। वार्षिक परीक्षा में वरीय स्थान प्राप्त करने वाले तथा निबन्ध, कविता-पाठ, चित्रकला, भाषण, खेलकूद, सांस्कृतिक गतिविधि, प्रश्नोत्तरी जैसे विभिन्न प्रतियोगिताओं में स्थान पाने वाले छात्रों को पुरस्कार वितरित किये गये। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में श्री नवांग रिगजिन जोरा, विधानसभा सदस्य ने विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किये। इस अवसर पर संस्थान के छात्रों द्वारा रंगारंग कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस समारोह में संस्थान के छात्र एवं अध्यापकों के अतिरिक्त लद्दाख क्षेत्र के अनेक विद्वान एवं गण्यमान्य अतिथि उपस्थित थे।

24. अन्य महत्त्वपूर्ण घटनाएँ

वर्ष के दौरान संस्थान के द्वारा बड़े उत्साह के साथ निम्नलिखित समारोहों का आयोजन किया गया-

क) भारतरत्न डॉ बी.आर. अम्बेडकर जयन्तीः भारतरत्न डॉ. बी. आर. अम्बेडकर की 126वीं जयन्ती 14 अप्रैल, 2017 को संस्थान में मनाया गया। इस अवसर पर अध्यापकों एवं वरिष्ठ छात्रों ने डॉ. बी.आर. अम्बेडकर के जीवन और उनकी उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर छात्रों के बीच निबन्ध एवं वक्तृत्व-कला प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. कोनचोग वांगदु, निदेशक ने की।

ख) डॉ. राधाकृष्णन की जन्म जयन्तीः संस्थान में 5 सितम्बर, 2017 को डॉ. राधाकृष्णन की जयन्ती 'शिक्षक दिवस' के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर भाग लेते हुए अध्यापकों एवं छात्रों ने डॉ. राधाकृष्णन के जीवन और उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर अध्यापकों द्वारा डॉ. राधाकृष्णन के जीवन और विचार से प्रेरणा लेकर उसको जीवन में अमल करने पर बल दिया गया।

ग) हिन्दी दिवसः संस्थान में 14 सितम्बर 2017 को हिन्दी में विभिन्न प्रकार के साहित्यिक प्रतियोगिताओं, जिनमें निबन्ध-लेखन, कविता-पाठ, सम्भाषण आदि सम्मिलित हैं, के माध्यम से हिन्दी दिवस का आयोजन किया गया। उपर्युक्त प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थानों पाने वाले छात्रों के बीच पुरस्कार वितरण किया गया। इसके अतिरिक्त इस अवसर पर विद्वानों द्वारा हिन्दी के प्रयोग के महत्त्व पर प्रकाश डाला गया।

घ) विश्व पुस्तक दिवसः संस्थान के नागार्जुन सभागार में दिनांक 24 अप्रैल, 2017 को विश्व पुस्तक दिवस को अंग्रेजी दिवस के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर अंग्रेजी में भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस अवसर पर संस्थान के छात्रों द्वारा अंग्रेजी में एक नाटक का मंचन भी किया गया।

ङ) लद्दाख का बौद्ध मंत्रोच्चारणः यूनेस्को द्वारा विश्व भर में फैले हुए महत्त्वपूर्ण सांस्कृतिक धरोहर के प्रति जागरुकता एवं उसकी सुरक्षा के लिए अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर की सूची बनायी गयी है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य विश्व भर में फैले हुए इन अमूर्त विरासतों की सम्पदा की सुरक्षा के महत्त्व के प्रति लोगों का ध्यान आकर्षित कर इन सांस्कृतिक विविधताओं के प्रति रचनात्मक उत्प्रेरण उत्पन्न करना है। अमूर्त सांस्कृतिक विरासत, किसी समुदाय, दल या व्यक्ति से सम्बद्ध वाद्य, वस्तु, कलाकृति तथा सांस्कृतिक अन्तराल का प्रतिनिधित्व करने वाले अभ्यास, सम्प्रेषण, ज्ञान, और लोगों के कौशल को अमूर्त सांस्कृतिक विरासत कहा जाता है। यह अमूर्त सांस्कृतिक विरासत इनमें से किसी में भी उजागर हो सकता है, जैसे- मौखिक परम्परा एवं सम्प्रेषण, भाषा, मूर्त-कला, सामाजिक व्यवहार, धार्मिक कृत्य एवं उत्सव, प्रकृति एवं जगत के संरक्षण से सम्बन्धित ज्ञान एवं व्यवहार तथा पारम्परिक शिल्पकला। तदनुसार संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार ने संस्थान को यूनेस्को द्वारा निर्मित अमूर्त सांस्कृतिक धरोहरों की सूची में लद्दाख के बौद्ध मंत्रोच्चारण परम्परा की सूची जोड़ने का कार्य सौंपा है। संस्थान ने ऐसी 60 मिनट की अन्तराल वाली एक वृहद एवं 20 मिनट की लघु सूची अंग्रेजी भाषा में दृश्य-श्रव्य (ऑडियो-विजुवल) माध्यम से डिजिटल फारमेट में बनाकर नोडल एजेन्सी इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के माध्यम से यूनेस्को को प्रेषित कर दिया है। यूनेस्को द्वारा लद्दाख की ~~मंत्रोच्चारण परम्परा तथा हिमालय-पार के पवित्र बौद्ध-ग्रन्थों के सूत्रपाठ परम्परा का~~ चयन करके इसे मानविकी के अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर की सूची में संलग्न किया गया है। लद्दाख के बौद्ध मंत्रोच्चारण के अन्तर्गत निम्नलिखित गोनपाओं के मंत्रोच्चार को रखा गया है-

क्रमांक	*गोनपा का नाम*	*मंत्रोच्चार के विषय*
1.	हेमिस गोनपा	रिगमा-चुटुक
~~2.~~	~~ठिकसे गोनपा~~	~~शर-कंगरी-मा~~
3.	फियाङ गोनपा	छोद
4.	माठो गोनपा	कुन-रिग

च) स्वच्छ भारत अभियानः भारत सरकार ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की पहल पर पूरे देश को स्वच्छ बनाने के उद्देश्य से स्वच्छ भारत अभियान की शुरुआत की। तदनुसार इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए केन्द्रीय बौद्ध विद्या सस्थान, लेह ने भी कार्यालय, कक्षाओं के कमरे, परिसर तथा संस्थान के आसपास के क्षेत्र को साफ-सुथरा रखने का कार्यक्रम चलाया, जिसमें छात्रों एवं कर्मचारियों ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया।

1. दिनांक 5 जून, 2017 को विश्व पर्यावरण दिवस
2. दिनांक 2 अक्तूबर, 2017 को महात्मा गाँधी जयन्ती

इसके अतिरिक्त पंचांग के अनुसार संस्थान मासिक स्तर पर सफाई की जिम्मेदारी ले लिया है। इतना ही नहीं साप्ताहिक स्तर पर अध्यापक छात्रों को स्वच्छ भारत अभियान पर भाषण देते हैं तथा छात्रों के बीच विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताओं, जिसमें निबन्ध, काव्य-पाठ, भाषण, चित्रकला आदि सम्मिलित हैं, का आयोजन भी किया जाता है। संस्थान में 01 सितम्बर से 15 सितम्बर, 2017 तक स्वच्छता पखवाड़ा का आयोजन किया गया और इस अवसर पर विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, भारत सरकार के निर्देशानुसार अन्य कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इसके साथ-साथ स्वच्छता ही सेवा कार्यक्रम के तहत संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के निर्देश पर संस्थान में 16

सितम्बर से 30 सितम्बर, 2017 तक कार्यक्रम चलाया गया।

25. संसदीय समिति का दौरा

उक्त वर्ष के दौरान संसद की निम्नलिखित समितियों ने संस्थान का दौरा किया-

क) राजाभाषा विभाग की संसदीय उप-समिति का पहला दौराः केन्द्रीय कार्यालय के पहले संसदीय उप-समिति का लेह (लद्दाख) का दौरा 12 मई, 2017 से लेकर 17 मई 2017 तक रहा। केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह में राजभाषा हिन्दी के काम-काज पर समिति की बैठक 16 मई 2017 को 11.00 बजे आहुत हुई। बैठक में दस्तावेजों पर विस्तार से चर्चा और और जाँच हुई और संस्थान में हिन्दी के काम-काज पर सन्तोष व्यक्त किया गया।

ख) लोकसभा के पटल पर दस्तावेज रखने से सम्बन्धित संसदीय समितिः श्री चन्द्रकान्त खैरे, माननीय संसद सदस्य की अध्यक्षता में लोकसभा के पटल पर दस्तावेज रखने वाली संसदीय समिति ने दिनांक 2 जुलाई से 6 जुलाई, 2017 तक लेह (लद्दाख) का दौरा किया। केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह द्वारा वार्षिक प्रतिवेदन एवं लेखा के विलम्ब से पहुँचने के मामले पर दिनांक 4 जुलाई 2017 को 15.00 बजे समिति और केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान के बीच बैठक हुई। इस बैठक में संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के तीन अधिकारी भी उपस्थित थे। बैठक में वार्षिक प्रतिवेदन एवं लेखा के संसद के समक्ष भेजने में हुई थोड़ी देरी के लिए दिये गये कारणों पर सन्तोष व्यक्त किया गया।

26. शीतकालीन शिविर

छात्रों के शैक्षिक मानक, भाषाई कौशल, आत्म-सम्मान में वृद्धि तथा इस क्षेत्र की सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण एवं उत्थान के लिए छात्र कल्याण समिति की पहल पर संस्थान के द्वारा दिनांक 1 दिसम्बर 2017 से 31 दिसम्बर 2017 तक शीतकालीन शिविर का आयोजन किया गया। इस दौरान अनेक प्रकार की गतिविधियों का संचालन किया गया, जिनमें दर्शन सम्बन्धी तर्क-वितर्क, प्रार्थना, ध्यान-भावना, नृत्य, गीत, खेल, सम्भाषण, शिक्षाविदों, नेताओं और दूसरे विशेषज्ञों से चर्चा शामिल थे। इस शिविर का खर्च जनजातीय उप-योजना तथा गैरसरकारी संस्था के दान से किया गया।

27. विदेशी छात्रों के बीच पारस्परिक संवाद

उक्त वर्ष के दौरान निम्नलिखित विदेशी छात्रों के बीच संवाद स्थापित किये गये-

क) जापान के नेहॉन विश्वविद्यालय के छात्रः प्रो. तेत्सुसुदुतम के नेतृत्त्व में जापान के नेहॉन विश्वविद्यालय से आये 20 छात्रों के दल के साथ दिनांक 15 अगस्त 2017 को एक दिवसीय पारस्परिक संवाद का आयोजन किया गया। केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह के छात्र एवं नेहॉन विश्वविद्यालय के छात्रों के बीच खान-पान, संस्कृति एवं रीति-रिवाजों को लेकर विचारों का आदान-प्रदान हुआ।

ख) सेईसन विश्वविद्यालय, जापानः दिनांक 19 अगस्त, 2017 को वैश्विक नागरिकता विभाग, सेईसन विश्वविद्यालय, जापान के प्रो. कैथी एवं प्रो. एवी के नेतृत्त्व में छात्रों के दल के साथ पारस्परिक संवाद का कार्यक्रम आयोजित हुआ। छात्रों ने एक-दूसरे देशों की शिक्षा पद्धति एवं एनविजन समाज पर विमर्श किया। कार्यक्रम बहुत सफल रहा।

28. मंगोलिया में भारत के राजदूत माननीय डॉ. टी. सुरेश बाबू का दौरा

दिनांक 29 अगस्त 2017 को मंगोलिया में भारत के राजदूत माननीय डॉ. सुरेश बाबू ने संस्थान का दौरा किया और संस्थान के वरिष्ठ अध्यापकों के साथ चर्चा की। उन्होंने संस्थान के पुस्तकालय, पारम्परिक विद्या विभाग के अन्तर्गत सोवा-रिगपा, थंका चित्रकला, शिल्पकला तथा काष्ठकला को देखा और पाठ्यक्रम से प्रभावित हुए।

29. बौद्ध दार्शनिक ग्रन्थ अनुवाद परियोजना

भोटी भाषा में भारतीय एवं भोट विद्वानों द्वारा रचित दर्शन से सम्बन्धित हजारों ग्रन्थ हैं, जिनमें भगवान बुद्ध की शिक्षा भरी पड़ी हैं। इन मूल्यवान ग्रन्थों से भोटी नहीं जानने वाले विद्वान एवं शोधार्थी लाभ नहीं उठा पा रहे हैं। इसीलिए संस्थान ने इन बौद्ध दार्शनिक ग्रन्थों को विद्वानों, शोध-कर्ताओं और इनमें अभिरुचि रखने वाले अन्य लोगों को हिन्दी में उपलब्ध कराने के लिए संस्थान की प्रबन्धकारिणी समिति के अनुमोदन पर एक लघु अनुवाद परियोजना स्थापित किया है।

30. हिमालयीय बौद्ध संस्कृति कोश परियोजना

संस्थान की प्रबन्धकारिणी समिति के अनुमोदन पर संस्थान ने हिमालयीय बौद्ध संस्कृति कोश परियोजना स्थापित किया है। यह योजना प्रारम्भ में पाँच वर्षों के लिए स्वीकृत किया गया था और इसे 10 खंडों में संकलन करना प्रस्तावित है। इस योजना में काम करने वाले विद्वान संविदा पर रखे गये हैं। प्रधान सम्पादक के नेतृत्व में दो सम्पादकों एवं तीन शोध-सहायकों द्वारा परियोजना का कार्य प्रगति पर है। लद्दाख क्षेत्र से सम्बन्धित विश्वकोश का खंड प्रकाशित हो चुका है। हिमाचल प्रदेश के लाहुल-स्पीति और किन्नौर घाटी पर सामग्री पूर्ण होकर प्रकाशन के लिए तैयार है। अन्य खंडों पर कार्य प्रगति पर है। दिनांक 19 दिसम्बर 2011 को आहूत प्रबन्धकारिणी समिति की बैठक में इसके महत्त्व को देखते हुए इस परियोजना को पाँच वर्षों का विस्तार दिया गया।

31. पांडुलिपि संसाधन केन्द्र

राष्ट्रीय पांडुलिपि मिशन, भारत सरकार ने केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह को लद्दाख क्षेत्र के लिए पांडुलिपि संसाधन केन्द्र और पांडुलिपि संरक्षण केन्द्र के रूप में मनोनीत किया है। तदनुसार संस्थान संविदा पर नियुक्त विद्वानों की सहायता से कार्य कर रहा है। वर्तमान में सात संसाधन कर्मी मार्च से नवम्बर तक कार्य करते हैं। प्रलेखन का

कार्य दिसम्बर से फरवरी तीन महीनों के लिए अत्यधिक ठंडे मौसम के कारण बन्द रखा जाता है। संस्थान ने अब तक लद्दाख के विभिन्न मठों/महलों/व्यक्तिगत 2,297 संग्रहों से लगभग 35,416 पांडुलिपियों का प्रलेखन कर लिया है। संस्थान इस क्षेत्र के सभी उपलब्ध पांडुलिपियों का प्रलेखन करने का प्रयास कर रहा है। इसके अतिरिक्त संस्थान इस क्षेत्र के विभिन्न मठों में उपलब्ध दुर्लभ पांडुलिपियों के संरक्षण का काम भी कर रहा है। अब तक 23,294 पृष्ठों का संरक्षण किया जा चुका है।

32. डिग्री/डिप्लोमा प्राप्त छात्रों का नियोजन

संस्थान छात्रों को पी-एच.डी., भोट बौद्ध दर्शन, संस्कृत बौद्ध दर्शन, प्राचीन बौद्ध इतिहास, भोटी साहित्य और तुलनात्मक दर्शन में आचार्य (एम.ए. के समकक्ष), उत्तरमध्यमा (12वीं के समकक्ष) तथा पूर्वमध्यमा (मैट्रिक के समकक्ष) की उपाधि/प्रमाण-पत्र प्रदान करता है। इसके साथ-साथ सोवा-रिगपा, थंका चित्रकला, शिल्पकला एवं काष्ठकला में छः वर्षीय डिप्लोमा प्रदान करता है। ऐसा देखा गया है कि केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह द्वारा उपर्युक्त डिग्री/डिप्लोमा प्राप्त कोई भी छात्र बेरोजगार नहीं है। उपर्युक्त डिग्री/डिप्लोमा उत्तीर्ण करने के बाद छात्र विशेष रूप से जम्मू कश्मीर के शिक्षा विभाग, केन्द्रीय विद्यालय, नवोदय विद्यालय, निजी विद्यालयों में आसानी से नियुक्त होकर इस क्षेत्र की सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण एवं संवर्द्धन में अपना योगदान देते हैं। उपर्युक्त डिग्री/डिप्लोमा प्राप्त उम्मीदवारों को आकाशवाणी एवं दूरदर्शन में काम करने का अच्छा अवसर मिलता है, क्योंकि वहाँ स्थानीय भाषा में प्रवीण उम्मीदवारों को प्राथमिकता दी जाती है। संस्थान को गर्व है कि यहाँ के पूर्व छात्र कश्मीर राज्य सेवा आयोग एवं संघ लोक सेवा आयोग के माध्यम से राज्य एवं केन्द्रीय सरकार की सेवाओं में अच्छे पदों पर आसीन हैं। इसके अतिरिक्त इस संस्थान के पूर्व छात्र सेना और अर्द्ध-सैनिक बलों के द्वारा पूरे भारत में भारत सरकार की सेवा कर रहे हैं। संस्थान के कुछ पूर्व छात्र देश के प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों, जैसे- विश्वभारती, शान्तिनिकेतन, जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय, नई दिल्ली आदि में भी कार्य कर रहे हैं। संस्थान से उपाधि प्राप्त बड़ी संख्या में पूर्व छात्र जम्मू कश्मीर पुलिस सेवा में अधिकारी के पदों पर कार्य कर रहे हैं। संस्थान के पूर्व छात्रों के सहयोग से ही संस्थान की शाखा एवं पोषित गोनपा विद्यालयों का संचालन किया जा रहा है, जिससे इस क्षेत्र की सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण एवं संवर्द्धन में सहयोग मिलता है।

सोवा-रिगपा में डिप्लोमा प्राप्त संस्थान के पूर्व छात्रों को राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के केन्द्रीय प्रायोजित योजना के तहत राज्य स्वास्थ्य विभाग में इस क्षेत्र के मरीजों की देखभाल के लिए नियुक्त किया जाता है। थंका चित्रकला, शिल्पकला और काष्ठकला में डिप्लोमा प्राप्त छात्र स्वतन्त्र रूप से थंका, मूर्तियों तथा काष्ठ की कलाकृतियों का निर्माण कर स्थानीय एवं पर्यटकों से अच्छी आमदनी प्राप्त कर लेते हैं। इसके अतिरिक्त इन कलाओं में प्राप्त डिग्री/डिप्लोमाधारियों को इसी प्रकार की संस्थाओं में प्रशिक्षक के रूप में नियुक्त किया जाता है।

इस प्रकार इस संस्थान से विभिन्न प्रकार की डिग्री/डिप्लोमा प्राप्त हजारों छात्रों में किसी को बेरोजगार नहीं पाया जाता है, जो संस्थान के लिए गर्व की बात है।

33. दुजिंग फोडंग विद्यालय, जंस्कर

1. **संक्षिप्त इतिहासः** सन् 1980 में जंस्कर बौद्ध संघ के निमंत्रण पर परम पावन दलाई लामा जी पहली बार जंस्कर पधारे। उन्होंने इस क्षेत्र की संस्कृति के संरक्षण की आवश्यकता को महसूस करते हुए एक विद्यालय की स्थापना के लिए जंस्कर बौद्ध संघ को कुछ धनराशि भेंट की। जंस्कार बौद्ध संघ ने इस क्षेत्र के निर्धन एवं जरुरतमंद छात्रों के कल्याण के लिए सितम्बर, 1984 में दुजिंग फोडंग, जंस्कर में एक विद्यालय की स्थापना की। यहाँ प्रारम्भ में कुल 101 छात्रों को प्रवेश दिया गया तथा तीन अध्यापकों को नियुक्त किया गया। सुदूर क्षेत्रों के छात्रों के लिए एक छात्रावास का प्रबन्ध भी किया गया। जंस्कर के बौद्ध निवासियों ने भी इस विद्यालय के लिए धन जुटाया। वर्ष 1988 में दूसरी बार जंस्कार पधारने पर परम पावन दलाई लामा जी ने विद्यालय के विकास के लिए पुनः धनराशि भेंट की। जंस्कर बौद्ध संघ और क्षेत्र की जनता ने तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री राजीव गाँधी को इस विद्यालय के महत्त्व के बारे में अवगत कराया तथा उनसे निवेदन किया कि केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह की तरह इस विद्यालय का प्रबन्धन भारत सरकार अपने अधीन कर ले। तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री राजीव गाँधी ने मार्च/अप्रैल, 1988 में अपनी जंस्कर यात्रा के दौरान वहाँ के नागरिकों की भावनाओं का आदर करते हुए ''दुजिंग फोडंग विद्यालय'' को केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह से सम्बद्ध करने की घोषणा की। तदनुसार भारत सरकार ने नवम्बर, 1989 से इस विद्यालय को केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह की शाखा के रूप में मान्यता प्रदान कर दी। तब से यह विद्यालय केन्द्रीय बौद्ध विद्या सस्थान, लेह के वित्तीय एवं प्रशासनिक नियन्त्रण में संचालित है। वर्तमान में इस विद्यालय में प्रथम कक्षा से दसवीं कक्षा तक कुल 296 छात्र अध्ययन कर रहे हैं। दुजिंग फोडंग विद्यालय के परिसर में शैक्षिक विभाग, एक छोटा सा पुस्तकालय, एक छोटा बहूपयोगी सभागार, 100 छात्रों के रहने के लिए छात्रावास, कर्मचारी आवास तथा एक खेल का मैदान है। जो छात्र छात्रावास में नहीं रहते हैं, उनके लाने-ले जाने के लिए एक स्कूल-बस भी है। जंस्कर घाटी एक अलग-थलग क्षेत्र है और शीतकाल में लगभग 6 से 7 महीने के लिए लेह और करगिल से कटा रहता है।

2. **दुजिंग फोडंग विद्यालय के परीक्षा-परिणामः** दुजिंग फोडंग विद्यालय, जंस्कर की कक्षा पहली से आठवीं तक के छात्रों की वार्षिक परीक्षाएँ वहाँ के प्रधानाध्यापक की निगरानी में विद्यालय द्वारा आयोजित की गयी। कक्षा नवमी तथा दसवीं के छात्रों की वार्षिक परीक्षाएँ केन्द्रीय बौद्ध विद्या सस्थान, लेह द्वारा संचालित की गयी। छात्रों को परीक्षा के लिए लेह आने में हो रही अनेक प्रकार की परेशानियों को ध्यान में रखते हुए दुजिंग फोडंग विद्यालय, जंस्कर में एक परीक्षा-केन्द्र की स्थापना की गयी। वर्ष 2017-18 सत्र के अन्तर्गत छात्रों के नामांकन और प्रत्येक कक्षा के परीक्षा-परिणाम का विवरण परिशिष्ट के अन्तर्गत पृष्ठ संख्या 40 पर अंकित है।

3. **दुजिंग फोडंग विद्यालय, जंस्कर की अन्य गतिविधियाँः** यह विद्यालय विभिन्न प्रकार की गतिविधियों का आयोजन कर रहा है, जिनमें वार्षिक क्रीड़ा-सह-साहित्यिक प्रतियोगिता, ऐतिहासिक स्थलों/बौद्ध विहारों का दर्शन, राष्ट्रीय स्तर के महापुरुषों की जयन्ती मनाना, मासिक भाषण प्रतियोगिता आदि सम्मिलित हैं। इसके अतिरिक्त इस विद्यालय में एक छोटा पुस्तकालय भी है, जिसमें छात्रों के लिए पुस्तकों का अच्छा संग्रह है।

4. **कर्मचारियों की संख्याः** प्राप्त विवरण के अनुसार दुजिंग फोडंग विद्यालय, जंस्कर में कर्मचारियों की संख्या परिशिष्ट के अन्तर्गत पृष्ठ संख्या 41 पर अंकित है।

34. बौद्ध दर्शन संस्कृत विद्यालय, केलंग, जिला-लाहुल-स्पीति (हि.प्र.)

1. **संक्षिप्त इतिहासः** बौद्ध दर्शन संस्कृत विद्यालय, केलंग (हि.प्र.) की स्थापना वर्ष 1976 में हिमालयी क्षेत्र लाहुल, स्पीति, किन्नौर, पांगी, कुल्लू और मनाली की बहुमूल्य बौद्ध कला, भाषा और संस्कृति को सुरक्षित रखने के लिए की गयी। सन् 1959 से पूर्व इस क्षेत्र के विद्वान, श्रामणेर एवं भिक्षु बौद्ध विद्या में उच्च अध्ययन के लिए तिब्बत जाते थे। अतः नवागत भिक्षुओं को पारम्परिक बौद्ध शिक्षा प्रदान करने के लिए बौद्ध दर्शन संस्कृत विद्यालय, केलंग अस्तित्त्व में आया। आरम्भ में यह विद्यालय स्थानीय निवासियों से धन जुटाकर संचालित किया जाता था। तत्पश्चात् भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय से ''बौद्ध/तिब्बती संस्था विकास वित्तीय सहयोग योजना'' के अन्तर्गत कुछ वित्तीय सहयोग प्राप्त हुआ। विद्यालय के पोषण के लिए हिमाचल प्रदेश सरकार की ओर से भी कुछ आर्थिक सहयोग प्राप्त हुआ, जो बाद में अवरुद्ध हो गया। स्थानीय लोगों ने इस विद्यालय को केन्द्रीय बौद्ध विद्या सस्थान, लेह और केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान, सारनाथ, वाराणसी की पद्धति के अनुसार भारत सरकार की एक स्वायत्त संस्था के रूप में हाथ में लेने के लिए अथक प्रयास किये। परन्तु इसको भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय की एक स्वायत्त संस्था के रूप में स्थापित नहीं किया जा सका।

   हालांकि हाल ही में संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार ने केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह की प्रबन्धकारिणी समिति की संस्तुति पर इस विद्यालय को दुजिंग फोडंग विद्यालय, जंस्कर की तरह केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह के अधीन एक शाखा विद्यालय के रूप में लेने का निर्णय लिया है। तदनुसार संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के पत्रांक एफ./1-11/2004-बी.टी.आई. दिनांक 05-03-2010 से बौद्ध दर्शन संस्कृत विद्यालय, केलंग (हि.प्र.) को केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह ने अपनी शाखा के रूप में नियंत्रण ले लिया है। तब से इस विद्यालय का संचालन केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह के द्वारा पूर्ण वित्तीय सहयोग से किया जा रहा है।

   वर्तमान में इस विद्यालय में प्रथम से दसवीं कक्षा तक कुल 75 छात्र अध्ययन कर रहे हैं। केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह द्वारा अपने शाखा विद्यालय के रूप अधिग्रहण करने के कारण छात्रों की संख्या में वृद्धि होने की सम्भावना है। इस विद्यालय में एक प्रधानाध्यापक, छः प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक, एक भोटी अध्यापक, एक बौद्ध दर्शन शिक्षक, एक उच्च श्रेणी लिपिक तथा तीन चतुर्थ वर्गीय कर्मचारी कार्यरत हैं। केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह दुजिंग फोडंग विद्यालय, जंस्कर की तरह इस विद्यालय के कर्मचारियों के वेतन, छात्रों की छात्रवृत्ति, साजो-सामान एवं दैनिक व्यय का खर्च वहन करता है। कालान्तर में प्रबन्धकारिणी समिति ने इस विद्यालय को मंडोगुलु, जिला-मंडी (हि.प्र.) स्थानान्तरित कर दिया है, जिसके लिए डिगुंग कर्ग्युद संस्था ने भवन और छात्रावास की व्यवस्था निःशुल्क की है।

2. **बौद्ध दर्शन संस्कृत विद्यालय का परीक्षा-परिणामः** इस विद्यालय की कक्षा 1 से 8 तक की वार्षिक परीक्षाएँ विद्यालय के प्रधानाध्यापक के पर्यवेक्षण में संचालित की जाती है। कक्षा 9 और 10 की परीक्षाएँ केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह द्वारा संचालित की जाती है। कक्षा-वार छात्रों की संख्या तथा उनके प्रत्येक कक्षा के परीक्षा-परिणाम परिशिष्ट के अन्तर्गत पृष्ठ संख्या 42 पर अंकित है।

3. **बौद्ध दर्शन संस्कृत विद्यालय के कर्मचारियों की संख्याः** बौद्ध दर्शन संस्कृत विद्यालय, केलंग (हि.प्र.) के कर्मचारियों की संख्या का विवरण परिशिष्ट के अन्तर्गत पृष्ठ संख्या 43 पर अंकित है।

केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह की संस्था की संरचना

क्रमांक	*सदस्यों के नाम एवं पता*	*पदनाम*
1.	श्री राघवेन्द्र सिंह भारत सरकार के सचिव, संस्कृति मंत्रालय	अध्यक्ष
2.	श्री बिपिन बिहारी मल्लिक उप-सचिव सह आर्थिक सलाहकार, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार	सदस्य (पदेन)
3.	श्री पद्म लोचन साहु संयुक्त सचिव (बौ.ति.सं.), संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार	सदस्य (पदेन)
4.	उच्च शिक्षा विभाग, मानव संसाधन मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा मनोनीत एक सदस्य (संयुक्त सचिव आई.सी.आर.)	सदस्य (पदेन)
5.	श्री पी. के. ठाकुर सचिव अथवा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा मनोनीत	सदस्य (पदेन)
6.	सुश्री एन्वी लवासा उपायुक्त, लेह	सदस्य (पदेन)
7.	भदन्त शडुप चम्बा अखिल लद्दाख गोनपा संघ, लेह (लद्दाख)	सदस्य (अशासकीय)
8.	श्री छेवांग ठिनलेस लद्दाख बौद्ध संघ, लेह (लद्दाख)	सदस्य (अशासकीय)
9.	भारत सरकार द्वारा मनोनीत दो प्रख्यात बौद्ध शिक्षाविद डॉ. रवीन्द्र पंथ, पूर्व उप-कुलपति, नव नालन्दा महाविहार	सदस्य (अशासकीय)

क्रमांक	*सदस्यों के नाम एवं पता*	*पदनाम*
10.	प्रो. हीरापाल गंग नेगी बौद्ध अध्ययन विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय	सदस्य (अशासकीय)
11.	प्रो. कोनचोक वांगदु निदेशक/उप-कुलपति केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह	सदस्य (पदेन)
12.	दो संकायाध्यक्ष गेशे डकपा कलजंग बौद्ध दर्शन संकाय, केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह	सदस्य (पदेन)
13.	डॉ. ठिनले यंगजोर सोवा-रिगपा एवं शिल्प विद्या संकाय केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह	सदस्य (पदेन)
14.	कुल सचिव केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह	सचिव (पदेन)

केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान की प्रबन्धकारिणी समिति की संरचना

क्रमांक	*नाम एवं पता*	*पदनाम*
1.	श्री प्रणव खुल्लर भारत सरकार के संयुक्त सचिव संस्कृति मंत्रालय, नई दिल्ली	अध्यक्ष
2.	सुश्री एन्वी लवासा उपायुक्त/मुख्य कार्यकारी अधिकारी लद्दाख स्वायत्त पर्वतीय परिषद, लेह	सदस्य
3.	प्रो. रमेश कुमार द्विवेदी उप-कुलपति, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी द्वारा मनोनीत	सदस्य
4.	श्री अरुण गुप्ता निदेशक (वित्त) संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार	सदस्य
5.	विदेश मंत्रालय, भारत सरकार का एक प्रतिनिधि	सदस्य (पदेन)
6.	निदेशक (बौ. ति.सं.) संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार	सदस्य (पदेन)
7.	मुख्य शिक्षा पदाधिकारी, लेह शिक्षा विभाग, जम्मू कश्मीर सरकार के प्रतिनिधि	सदस्य (पदेन)
8.	भदन्त शडुप चम्बा, अध्यक्ष अखिल लद्दाख गोनपा संघ, लेह (अखिल लद्दाख गोनपा संघ, लेह के प्रतिनिधि)	सदस्य
9.	श्री छेवांग ठिनलेस, अध्यक्ष लद्दाख बौद्ध संघ, लेह (लद्दाख बौद्ध संघ, लेह के प्रतिनिधि)	सदस्य

क्रमांक	*नाम एवं पता*	*पदनाम*
10.	भारत सरकार द्वारा मनोनीत तीन बौद्ध विद्वान प्रो. नवांग समतेन, उप-कुलपति केन्द्रीय तिब्बती उच्च शिक्षा संस्थान, सारनाथ, वाराणसी	सदस्य
11.	निदेशक, नव नालन्दा महाविहार, नालन्दा	सदस्य
12.	भदन्त विमलतिस्स भिक्खु ग्राम-चोंगखम, पोस्ट-चोंगखम जिला-लोहित, अरुणाचल प्रदेश	सदस्य
13.	भारत सरकार द्वारा मनोनीत कर्मचारी प्रतिनिधि	सदस्य
14.	प्रो. कोनचोक वांगदु, निदेशक केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह	सदस्य सचिव

केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह की शिक्षा समिति की संरचना

क्रमांक	*नाम और पता*	*पदनाम*
1.	प्रो. कोनचोक वांगदु, निदेशक केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह	अध्यक्ष
2.	चार संकायाध्यक्ष/संकाय गेशे डकपा कलजंग बौद्ध दर्शन एवं न्याय संकाय	सदस्य
3.	खनपो कोनचोक थुबतन भाषा एवं साहित्य संकाय	सदस्य
4.	खनछेन छेवांग रिगजिन आधुनिक विद्या संकाय	सदस्य
5.	डॉ. ठिनलेस यंगजोर सोवा-रिगपा एवं शिल्प विद्या संकाय	सदस्य
6-12.	विभागाध्यक्ष डॉ. उर्ग्यन डाडुल भोट बौद्ध दर्शन विभाग	सदस्य
7.	गेशे लोबजंग छुलठिम सम्प्रदाय शास्त्र विभाग	सदस्य
8.	डॉ. एस.पी. चक्रवर्ती संस्कृत बौद्ध दर्शन विभाग	सदस्य
9.	श्री सोनम वांगचुक आधुनिक भाषा विभाग	सदस्य
10.	डॉ. भगवती प्रसाद शास्त्रीय भाषा विभाग	सदस्य

क्रमांक	*नाम और पता*	*पदनाम*
11.	भदन्त कोनचोक थबडोल कला एवं शिल्प विभाग	सदस्य
12.	डॉ. पी.एस. जीना सामाजिक विज्ञान विभाग	सदस्य
13-15.	तीन प्रख्यात शिक्षाविद, जो संस्थान की सेवा में नहीं हैं	
	प्रो. लोबजंग फुनछोग	सदस्य
14.	प्रो. लोबजंग छेवांग	सदस्य
15.	प्रो. टशी सम्फेल	सदस्य
16.	प्रशासनिक अधिकारी	सचिव

केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह की वित्तीय समिति की संरचना

क्रमांक	*नाम और पता*	*पदनाम*
1.	श्री अरुण गुप्ता निदेशक (वित्त) संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार, नई दिल्ली	अध्यक्ष
2.	निदेशक (बौ.ति.सं.) संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार, नई दिल्ली	सदस्य
3.	प्रो. कोनचोक वांगदु निदेशक केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह	सदस्य
4.	प्रशासनिक अधिकारी केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह	सदस्य सचिव

केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान की प्रकाशन समिति की संरचना

क्रमांक	*नाम और पता*	*पदनाम*
1.	प्रो. कोनचोक वांगदु निदेशक केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह	अध्यक्ष
2.	डॉ. पदमाकर मिश्र प्रकाशन प्रभारी सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी	सदस्य
3.	प्रधान सम्पादक अनुवाद ईकाई केन्द्रीय तिब्बती उच्च शिक्षा संस्थान सारनाथ, वाराणसी	सदस्य
4.	खनपो कोनचोक फनदे लेह, लद्दाख	सदस्य
5.	डॉ. लोबजंग छेवांग पूर्व प्रोफेसर, तुलनात्मक दर्शन केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह	सदस्य
6.	डॉ. कोनचोक रिगजिन प्रकाशन अधिकारी केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह	सदस्य
7.	प्रशासनिक अधिकारी केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह	सदस्य

केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह की पुस्तकालय-समिति की संरचना

क्रमांक	*नाम और पता*	*पदनाम*
1.	प्रो. कोनचोक वांगदु निदेशक केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह	अध्यक्ष
2.	पुस्तकालयाध्यक्ष जिला पुस्तकालय, लेह	सदस्य
3.	डॉ. टशी सम्फेल निदेशक स्रोंगचन पुस्तकालय, देहरादून	सदस्य
4.	भदन्त लगदोर निदेशक तिब्बती पुस्तकालय एवं लेखागार धर्मशाला (हि.प्र.)	सदस्य
5.	श्रीमती छेवांग डोलमा पुस्तकालय एवं सूचना अधिकारी केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह	सदस्य सचिव

केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह की अनुसंधान-समिति की संरचना

क्रमांक	*नाम और पता*	*पदनाम*
1.	प्रो. आर. के. द्विवेदी अध्यक्ष बौद्ध दर्शन विभाग सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी	अध्यक्ष
2.	प्रो. प्रद्युम्न दूबे पालि एवं बौद्ध अध्ययन विभाग काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी	सदस्य
3.	डॉ. हीरापाल गंग नेगी प्रोफेसर एवं अध्यक्ष बौद्ध अध्ययन विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली	सदस्य
4.	प्रो. जमयंग ग्यलछन पूर्व प्रोफेसर, भोट साहित्य केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह	सदस्य
4.	डॉ. एल.एन. शास्त्री प्रधान सम्पादक केन्द्रीय तिब्बती उच्च शिक्षा संस्थान सारनाथ, वाराणसी	सदस्य
5.	प्रो. कोनचोक वांगदु निदेशक केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह	सदस्य सचिव

केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह के कर्मचारियों की श्रेणी-वार संख्या

क्र.सं.	*पदनाम*	*पे-बैंड तथा ग्रेड-पे*	*स्वीकृत पद*	*भरे गये*	*खाली*
क)	**शैक्षणिक कर्मचारी**				
1.	निदेशक	37400-6700+10000	01	01	—
2.	प्रोफेसर	37400-6700+8900	04	00	04
3.	रीडर	15600-39100+7600	09	05	04
4.	लेक्चरर	15600-39100+5400	23	21	02
5.	मास्टर क्राफ्टमैंन	15600-39100+5400	01	01	—
6.	प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक	9300-34800+4600	12	10	02
7.	इन्ट्रक्टर (काष्ठकला)	5200-20200+2800	01	01	—
8.	गोनपा शिक्षक	5200-20200+2800	100	90	10
ख)	**गैर शैक्षणिक कर्मचारी**				
1.	प्रशासनिक अधिकारी	15600-39100+6600	01	—	01
2.	अति.प्रशा. अधिकारी	15600-39100+6600	01	01	—
3.	कार्यालय अधीक्षक	9300-34800+4200	01	01	—
4.	लेखाकार	9300-34800+4200	01	01	—
5.	स्टाफ नर्स	9300-34800+4200	01	01	—
6.	व्यक्तिगत सहायक	9300-34800+4200	01	01	—
7.	मुख्य सहायक	9300-34800+4200	01	01	—
8.	स्टेनोग्राफर	5200-20200+2800	01	01	—
9.	कार्यालय सहायक	5200-20200+2400	04	04	—
10.	रोकड़िया	5200-20200+2400	01	01	—
11.	भंडारक	5200-20200+2400	01	01	—
12.	निम्न श्रेणी लिपिक	5200-20200+1900	01	01	—
13.	पम्प आपरेटर	5200-20200+2400	01	01	—

क्र.सं.	*पदनाम*	*पे-बैंड तथा ग्रेड-पे*	*स्वीकृत पद*	*भरे गये*	*खाली*
14.	चालक	5200-20200+2400	02	02	—
15.	गार्ड कमाण्डर	5200-20200+2400	01	01	—
16.	वरिष्ठ गार्डमैन	5200-20200+1900	01	01	—
17.	गार्डमैन	4440-7440+1300	04	04	—
18.	जमादार	4440-7440+1400	01	01	—
19.	चपरासी	4440-7440+1300	06	06	—
20.	छात्रावास रसोईया	4440-7440+1300	04	04	—
21.	छात्रावास बेयरर	4440-7440+1300	01	01	—
22.	कैन्टीन बेयरर	4440-7440+1300	01	01	—
23.	माली	4440-7440+1300	01	01	—
24.	सफाईवाला	4440-7440+1300	03	03	—
ग) पुस्तकालय कर्मचारी					
25.	पुस्तकालय एवं सूचनाधिकारी	15600-39100+5400	01	01	—
26.	सहायक सम्पादक सह कैटेलोगर	9300-34800+4200	01	—	01
27.	पुस्तकालय एवं सूचना सहायक	9300-34800+4200	01	01	—
घ) अनुसंधान ईकाई					
29.	अनुसंधान अधिकारी	15600-39100+5400	01	01	—
30.	अनुवादक	9300-34800+4600	01	01	—

केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह का वर्ष 2017-18 के छात्रों के परीक्षा-परिणाम

कक्षा	*छात्रों की संख्या*	*परीक्षा में शामिल*	*उत्तीर्ण*	*उत्तीर्णता प्रतिशत*
क) विश्वविद्यालीय कक्षाएँ				
1. पूर्वमध्यमा प्रथम	80	77	50	65
2. पूर्वमध्यमा द्वितीय	99	97	66	68
3. उत्तरमध्यमा प्रथम	71	69	50	72.5
4. उत्तरमध्यमा द्वितीय	57	55	39	71
5. शास्त्री प्रथम	27	26	26	100
6. शास्त्री द्वितीय	42	42	37	88
7. शास्त्री तृतीय	34	34	31	91
8. आचार्य प्रथम	38	38	31	83
9. आचार्य द्वितीय	16	16	16	100
कुल	**464**	**454**	**346**	**76**
ख) पारम्परिक हिमालयी कला				
1. काष्ठकला	05	04	02	50
2. शिल्पकला	16	14	11	78
3. चित्रकला	27	23	11	47
4. सोवा-रिगपा	38	34	20	58
5. ज्योतिष विद्या	03	03	02	66
कुल	**89**	**78**	**46**	**59**
ग) कनिष्ठ वर्ग				
1. छठी	44	44	29	66
2. सातवीं	46	43	35	81
3. आठवीं	58	54	45	83
कुल	**148**	**141**	**109**	**77**
कुलयोग (क + ख + ग)	**701**	**673**	**501**	**74**

केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह से सम्बद्ध गोनपा/श्रामणेरी विद्यालयों की वर्ष 2017-18 में विद्यालय-वार तथा कक्षा-वार छात्रों की संख्या

क.सं.	गोनपा/श्रामणेरी विद्यालय के नाम	कक्षा-वार छात्रों की संख्या									शिक्षकों की संख्या
		पहली	दूसरी	तीसरा	चौथी	पाँचवी	छठी	सातवीं	आठवीं	कुल	
	गोनपा विद्यालय										
1.	हेमिस गोनपा	04	06	13	17	21	23	27	08	119	05
2.	शचुकुल गोनपा	04	03	05	06	07	05	04	—	34	03
3.	चेमडे गोनपा	—	02	02	06	10	—	—	—	20	02
4.	अनले गोनपा	—	02	03	—	03	—	—	—	08	02
5.	कर्मा डुबग्युद छोसलिंग	04	13	—	03	05	—	—	—	25	02
6.	लिकिर गोनपा	07	02	07	07	01	—	—	—	24	03
7.	ठिगसे गोनपा	01	03	02	02	02	—	—	—	10	02
8.	समतनलिंग गोनपा	01	04	03	03	01	—	—	—	12	02
9.	पेथुब गोनपा	10	05	05	05	05	—	—	—	30	02
10.	फियांग गोनपा	05	—	—	04	—	—	—	—	09	02
11.	ग्युदजिंग तांत्रिक गोनपा	01	02	01	—	—	—	—	—	04	01
12.	माठो गोनपा	—	—	—	06	—	—	—	—	06	01
13.	हानुथंग गोनपा	01	01	02	02	01	—	—	—	07	01
14.	स्तगना गोनपा	02	03	03	04	—	—	—	—	12	01
15.	किदचन गोनपा	04	01	01	01	05	—	—	—	12	01
16.	मुद गोनपा	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—
17.	न्योमा गोनपा	—	05	05	03	01	—	—	—	14	02
18.	छुशुल गोनपा	06	07	02	05	05	—	—	—	25	02
19.	रिजोंग गोनपा	—	01	02	03	04	—	—	—	10	02
20.	दिस्किद गोनपा	03	03	04	02	—	—	—	—	12	01
21.	यरमा गोनबो	01	—	—	02	01	—	—	—	04	01
22.	बरदन गोनपा	02	03	06	04	03	—	—	—	18	02
23.	कोरजोक गोनपा	04	02	01	01	—	—	—	—	08	02
24.	करशा गोनपा	13	05	06	05	04	—	—	—	33	02

क.सं.	गोनपा/श्रामणेरी विद्यालय के नाम	कक्षा-वार छात्रों की संख्या									शिक्षकों की संख्या
		पहली	दूसरी	तीसरा	चौथी	पाँचवी	छठी	सातवीं	आठवीं	कुल	
25.	लामायुरू गोनपा	01	02	08	03	—	—	—	—	14	02
26.	फुकथर गोनपा	01	—	05	09	—	13	11	—	39	03
27.	रंगदुम गोनपा	—	05	09	—	03	—	—	—	17	02
28.	मुने गोनपा	03	—	—	04	05	—	—	—	12	02
29.	जोंगखुल गोनपा	—	01	04	—	01	—	—	—	06	01
30.	स्तोंगदे गोनपा	—	02	04	03	—	—	—	—	09	01
31.	स्तगरिमो गोनपा	—	01	03	03	02	—	—	—	09	01
32.	पलदर गोनपा	15	11	13	12	13	—	—	—	64	03
33.	की गोनपा	—	—	—	08	05	—	—	—	13	02
34.	तंगयुल गोनपा	—	03	03	03	03	—	—	—	12	02
35.	नालन्दा गोनपा	—	01	05	07	05	—	—	—	18	02
	श्रामणेरी/ननरी विद्यालय										
36.	तिंगमोगंग ननरी	01	02	—	01	06	—	—	—	10	01
37.	स्किदमंग ननरी	02	01	02	04	01	—	—	—	10	02
38.	चुलिचन ननरी	—	—	01	06	05	—	—	—	12	02
39.	बोदखरबू ननरी	02	03	03	02	—	—	—	—	10	01
40.	वाखा ननरी	—	03	02	—	—	—	—	—	05	01
41.	शरगोल ननरी	—	02	01	—	—	—	—	—	03	01
42.	जंगला ननरी	02	08	—	—	02	—	—	—	12	01
43.	करशा ननरी	04	05	06	02	02	—	—	—	19	02
44.	टशी छोसलिंग ननरी	02	04	02	07	05	—	—	—	20	01
45.	स्क्या ननरी	01	05	03	04	05	—	—	—	18	02
46.	यंगचेन छोसलिंग	01	—	05	11	—	—	—	—	17	02
47.	तुंगरी ननरी	08	02	02	—	05	—	—	—	17	02
48.	दोर्जेजोंग ननरी	02	09	—	08	—	—	—	—	19	01
49.	फगमोलिंग ननरी	09	06	06	03	—	—	—	—	24	02
50.	देचेन छोसलिंग ननरी	04	—	03	—	25	—	—	—	32	02
कुल योग		**131**	**149**	**163**	**191**	**172**	**41**	**42**	**08**	**897**	**88**

दुजिंग फोडंग विद्यालय, जंस्कर के वर्ष 2017-18 में छात्रों के परीक्षा-परिणाम

कक्षा	*छात्रों की संख्या*	*परीक्षा में उपस्थित*	*उत्तीर्ण*	*उत्तीर्णता प्रतिशत*
पहली	78	77	62	81
दूसरी	36	36	31	89
तीसरी	36	35	33	94
चौथी	31	29	26	86
पाँचवीं	27	25	24	96
छठी	26	24	23	96
सातवीं	21	21	17	81
आठवीं	25	25	25	100
नवमी	22	22	22	100
दसवीं	16	16	12	75
कुल	**318**	**310**	**275**	**89**

दुजिंग फोडंग विद्यालय, जंस्कर के कर्मचारियों की संख्या

पदनाम	ग्रेड	स्वीकृत पद	भरे गये पद	रिक्त पद
शैक्षणिक कर्मचारी				
1. प्रधानाध्यापक	9300-34800+4800	01	01	—
2. प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक	9300-34800+4600	07	06	01
3. प्राथमिक शिक्षक	5200-20200+2800	05	05	—
4. पी.ई.टी. (संविदा)	17,140/- (स्थिर)	01	—	
गैर-शैक्षणिक कर्मचारी				
1. उच्च श्रेणी लिपिक (संविदा)	9,910.00 (स्थिर)	—	01	—
2. रसोईया	4440-7440+1300	01	01	—
3. चपरासी	4440-7440+1300	01	01	—
4. चालक (संविदा)	8,510/- (स्थिर)	—	01	—
5. माली	4440-7440+1300	01	01	—
6. चौकीदार	4440-7440+1300	01	01	—

बौद्ध दर्शन संस्कृत विद्यालय, मंडोगुलु (हि.प्र.) के वर्ष 2017-18 के परीक्षा-परिणाम

कक्षा	*छात्रों की संख्या*	*परीक्षा में उपस्थित*	*उत्तीर्ण*	*उत्तीर्णता का प्रतिशत*
पहली	02	02	02	100
दूसरी	08	08	08	100
तीसरी	06	06	06	100
चौथी	09	09	09	100
पाँचवीं	07	07	07	100
छठी	07	07	07	100
सातवीं	17	17	17	100
आठवीं	05	05	05	100
नवमी	02	02	01	50
दसवीं	02	02	02	100
कुल	**65**	**65**	**64**	**98**

बौद्ध दर्शन संस्कृत विद्यालय, मंडोगुलु (हि.प्र.) के कर्मचारियों की संख्या

पदनाम	*पे-बैंड + ग्रेड पे*	*स्वीकृत पद*	*भरे गये*	*रिक्त*
शैक्षणिक कर्मचारी				
1. प्रधानाध्यापक	9300-34800+4800	01	—	01
2. प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक	9300-34800+4600	08	07	01
3. पी.ई.टी.	9300-34800+4600	01	01	—
गैर-शैक्षणिक कर्मचारी				
4. उच्च श्रेणी लिपिक	5200-20200+2400	01	01	—
5. चतुर्थ वर्गीय कर्मचारी	4440-7440+1300	03	03	—